उज्जयिनी तीर्थ-क्षेत्रे, नागर समाज

अनादि तीर्थ क्षेत्र उज्जयिनी निर्विवाद है, इस लिये कि देश की एक मात्र उत्तरावाहिनी क्षिप्रा तट पर यह स्थित है। जबकि अन्य नदियां प्रायः दक्षिण, पश्चिम और पूर्वाभिमुखी बहने तथा स्वयं भू महाकालेश्वर यहां विराजित है। इसी कारण नेपाल सहित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में महाकाल बाबा को ब्रह्म मुहूर्त में भस्मी लेपन होता है और उनकी जलाधारी उत्तर के बजाय पूर्व दिशा की ओर है। अवन्ती जनपद के सम्राट विक्रमादित्य ने अपने नाम से विक्रमाब्ध संवत्सर प्रचलित कर इस नगरी को गौरवान्वित कर महिमा मंडित किया।

उद्योग-धन्धों से सम्पन्न गुजरात से नागर ब्राह्मण समाज सहित अन्य जातियों का सोमनाथ मंदिर पर आततायी मो. गजनवी के बर्बर आक्रमण और जबरिया धर्म परिवर्तन से अपनी अस्मिता को बचाने के लिये उन्हें पलायन के लिये बाध्य होना पड़ा। वे मालवा क्षेत्र के घने जंगल में कालीसिन्ध नदी तट पर आए। सुन्दरसी में उज्जैन के प्रसिद्ध मंदिरों के अनुरुप मंदिरों के निर्माण का सूत्रपात प्रकट करता है कि वे उज्जैन आना चाहते थे किन्तु शाजापुर से बाद में वे आसपास के ग्रामों कस्बों, लसूल्डिया, राजगढ़-ब्यावरा, सारंगपुर, जीरापुर, माचलपुर, खिलचीपुर, नलखेड़ा, दम-दम पचलाना (कानड) सुसनेर, बाड़ोली रुपाखेड़ी, राऊ, घुन्सी, इन्दौर, उज्जैन, माकड़ोन, नेवरी-भौंरासा, पीपलरावां में बसते गये। इसके अलावा कुछ राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों में चले गये।

उल्लेखनीय है कि नागर समाज के साथ ही खेतीहर कुलम्बी (पाटीदार) समाज भी आए और जो गुजरात में रह गये उन्होंने अपनी शर्तों पर धर्म परिवर्तन कुबूल कर लिया जो नागर समाज के परिवर्तित बोहरा स्वरुप में सामने है। यहां यह भी ज्ञातव्य है कि लसूल्डिया और रुपाखेड़ी में दो भाई समाज के पटेल नियुक्त हुए अग्रज भाई बड़ी संभा एवं छोटे भाई श्री सिद्धनाथ पटेल के पूर्वज छोटी संभा के पटेल बने थे। कहा जाता है कि जो दो भाई लसूल्डिया और रुपाखेड़ी आए थे उनमें से एक बड़ा भाई कुंवारा था एवं छोटा भाई शादीशुदा था। लसूल्डिया गांव में विजातीय विवाह किया। इस तड़ की यह परम्परा बनी कि वे एक से अधिक विवाह कर सकते हैं। छोटी संभा में वैवाहिक जीवन इस कदर कठोर थे कि कम उम्र की लड़कियों को ताउम्र वैधव्य जीवन व्यतीत करना होता था। इस आधार पर बिसलनगरा समाज की दो तड़ अस्तित्व में आई। कहने की आवश्यकता नहीं कि मालवा खण्ड में बड़नगर साठोत्रा और दशोरा को छोड़ बिसलनगरा समाज का पदार्पण हुआ। शेष तीनों समाज अवन्ती-जनपद के आसपास के नगरों-रतलाम, मन्दसौर, नीमच, डिकेन, रतनगढ़ की ओर निकल गये।

नये क्षेत्रों में बसने के साथ ही बिसलनगरा समाज को जीवन यापन की समस्या के साथ ही समाज को संगठित बनाए रखने की भी थी। साथ आया पाटीदार समाज नागर समाज के प्रति विशेष अनुरागी रहा है। उनके माध्यम से मंदिरों की पूजा पाठ भजन कीर्तन की ओर वे प्रेरित हुए। नागर समाज से कथा वाचकों प्रवचनकारों ने अपनी साख बनाई और लोकप्रियता अर्जित की। रंथभंवर (बेरछा) के पं. लक्ष्मीनारायण नागर के प्रवचन और नरसिंह मेहता के मामेरे की कथा में अंग्रेजों के शासन काल में शासकीय स्तर पर पुरस्कृत भी हुए है। यह सिलसिला आज भी जीवन्त हैं। मालवांचल से नागर समाज के होनहार व्यक्तित्व पनप रहे हैं और ख्याति प्राप्त कर रहे हैं।

अब अपनी मूल स्थानीय प्रवेशिका पर दृष्टिपात करने पर सहसा स्मृत हो आते हैं महर्षि तुल्य दुर्गाशंकर जी नागर नई सड़क जिनकी प्राकृतिक चिकित्सकीय संस्था 'कल्पवृक्ष' पत्रिका प्रकाशन से नागर समाज की देशभर में ख्याति हो गई उन्हें प्रथम नागर नागरिक अवश्य कहा जा सकता है। सन्त नागर जी अपने आप में संस्था थे। फिर ध्यान आता है नयापुरा स्थित शुकलजी महाराज का वे स्थानीय नागर समाज के कर्मकाण्डी गौरजी तो रहे ही उनके मार्ग दर्शन में उर्दुपुरा में ज्ञाति बन्धुओं की बसाहट से नागर सेरी कहलाई। यहां स्थित हाटकेश्वर मंदिर की प्राचीनता अपनी कहानी स्वयं कहता है। मंदिर के आसपास की जमीन खरीद कर बड़ी संभा की धर्मशाला का स्वरुप प्रदान किया गया। पूर्व में यह धर्मशाला जमीन छोटी संभा के नागर सेरी में बसे ज्ञाति बंधुओं के अधिकार में रही थी उसे बड़ी संभा को प्रदान कर दी गई थी।

इसी प्रकार छुटपुट बसे नागर समाज द्वारा बंबाखाना क्षेत्र में एक मंदिर स्थित जमीन खरीद कर यहां हाटकेश्वर भगवान की प्रतिमा स्थापित कर धर्मशाला का स्वरुप प्रदान किया गया। इसी श्रृंखला में पं. गोपीलालजी, पं. मांगीलाल पटेल, गेन्दालालजी, पं. बद्रीनारायणजी नाकेदार, पं. जानकीलालजी नागर आदि ने हरसिद्धि पाल पर एक मकान छोटी संभा के तत्वावधान में क्रय किया गया था, उसे धर्मशाला बना कर प्रथमतः श्री लक्ष्मीनारायण नागर अध्यक्ष नियुक्त बनाए गये थे।

कृषि, किसान जगत का सजग राष्ट्रीय समाचार पत्र
कृषि ॐकार
सभी क्षेत्रों में ऐजेन्सी देना है
सम्पर्क करें- मो. 94250-61063 सम्पादक- शशि बजाज

जिसे समाज के चन्दे से बाद में श्री गोवर्धनलाल मेहता व श्री मयारामजी रावल के संयुक्त नेतृत्व में सन 1980 के दशक में धर्मशाला निर्माण के साथ ही भगवान श्री कृष्ण व श्री नरसिंह मेहता की प्रतिमाएं स्थापित कर भव्य हाटकेश्वर मंदिर का शिल्प भी किया गया। वर्तमान में विधिवत गठित न्यास द्वारा संचालित है। इससे प्रेरित हो बड़ी व छोटी संभा के मध्य समझोते के आधार पर बड़ी संभा को धर्मशाला निर्माण हेतु सौंप दी गई। 1985 के आसपास यहां भी निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ।

ज्ञातव्य है कि कोई भी नागर उज्जैन का निवासी नहीं है। वे आसपास के क्षेत्रों से आकर बसते गये। इस सन्दर्भ में प्रथमतः ध्यान में आता है पं. लक्ष्मीनारायणजी नागर, ज्योतिषी एवं कथावाचक बुधवारिया व श्री रामलालजी जड़िया के परिवार, सतीगेट पर टिकती है। तदनन्तर क्रम में पं. जितेन्द्र नारायणजी व्यास परिवार ब्राह्मणगली, श्री वासुदेवजी पटवारी, इन्दौर गेट, पं. देवीलालजी, कथावाचक माकड़ोन वाले निजात पुरा, पं. राधेलालजी व्यास (मड़ावदा) पूर्व सांसद ब्राह्मणगली, पं. मदन मोहनजी मेहता तेलीवाड़ा, सत्यनारायणजी नागर बुआखेड़ी वाले कंठाल के बसने का क्रम आता है। छोटी संभा के ज्ञाति बन्धुओं पर प्रथमतः दृष्टि ठहरती है क्षिप्रा नदी पार श्री रणजीत हनुमान के पं. रामा गुरु, श्री हनुमान अष्टमी पर औदित्य ब्राह्मण समाज के सहयोग से प्रतिवर्ष समूचे ब्राह्मण समाज का सामूहिक सहभोज भव्यता के साथ आयोजित करते थे। इसी क्रम में पं. गिरधारीलालजी सखीपुरा वालों का स्मरण आता है। वे तथा उनके पुत्र पं. सिद्धनाथजी नानागुरु को मंगलनाथ क्षेत्र में एक मंदिर तथा हनमन्तेश्वर मंदिर की पूजा पाठ का अधिकार प्राप्त था। इसी क्रम में पं. कन्हैयालालजी नागर खजान्ची का परिवार भाटगली में आकर बसे। उनके भाई पं. पन्नालालजी घी वाले नमकमंडी क्षेत्र में निवास करते थे। पं. सिद्धेश्वर जी नागर की बहिन श्रीमती राजीबाई का परिवार राजस्थान के खाराकुआ में रहने लगा था। इस परिवार की शाखाएं कालान्तर में बोहरा बाखल में श्री रामचन्द्रजी नागर, श्री आनन्दीलालजी नागर चक्कीवाले तोपखाना में, पं. मोतीलालजी बेगमपुरा, पं. राधेलालजी कमेड़वाले, पं. बद्रीनारायणजी नाकेदार तथा श्री गेन्दालालजी व उनके पुत्र श्री गोवर्धनलाल मेहता, रंथभवर वाले का परिवार कंगालपुरा में निवास करने लगा।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि प्रथमतः उर्दुपुरा में नागर सेरी की अवस्थिति और हाटकेश्वर मंदिर की प्राचीनता दर्शाती है कि ज्ञाति बन्धु पहले यहां आकर बसे। यह क्षेत्र भैरवगढ़ गढ़ कालिका के सन्निकट है जहां पुराना नगर आबाद था। रेल्वे स्टेशन के आसपास बस्ती अवश्य रही होगी साथ ही दौलतगन्ज में मण्डी क्षेत्र होने से आबादी यहां बसने लगी थी। नई बसावट को पुराने शहर से जोड़ने वाली नई सड़क बनी और नया पुरा अस्तित्व में आया। इस आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पुरानी बस्ती में दो दशक पूर्व से ज्ञाति बन्धुओं के दो तीन परिवार बस चुके थे। तत्पश्चात कोई डेढ़ दर्जन परिवार बाद के समय बसते गये। वर्तमान में एक मोटे अनुमान के अनुसार शहर में तीन सौ परिवार के लगभग बस चुके हैं।

यहां यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि ज्ञाति बन्धु स्वपाकी थे। वे अपने हाथों बना भोजन करते थे। यहां तक कि घर के बाहर या प्रवास में लोटी डोर साथ लेकर चलते थे। नागरों की शुद्धता और पवित्रता की मिसाल इतर ब्राह्मण समाज के लोग दिया करते थे। पढ़ने में यह भी आया कि गुजरात में दामोदर मेहता राज्य शासन के मुख्य सलाहकार थे। जिस प्रकार यू.पी. बिहार में कायस्थों को कलम का धनी माना जाता है उसी प्रकार कूटनीतिक और बुद्धिकोशल में नागरों की अपनी पहचान अलग थी। नागर समाज का प्रतीक चिन्ह "कड़छी-बड़छी और कलम" से स्पष्ट है कड़छी, स्व-पाकी, बड़छी अस्त्र युद्ध कौशल व कलम शिक्षा संस्कारी होने समग्र राज्य-समाज में, स्वावलम्बन, सुरक्षा और मार्गदर्शन का प्रतिनिधि समाज का स्वरुप स्वतः स्पष्ट होता है। यह बात अलग है कि बदलते माहौल में नागर-समाज का यह वैभव धुमिल है। क्या यह कभी समाज के मूल्यांकन का विषय बन सकेगा?

प्रस्तुति-सत्यनारायण नागर, उज्जैन

शुभकामनाओं सहित

प्रतिभा सिन्टेक्स लि.

पीथमपुर (म.प्र.)

V पशुपतिनाथ ही हाटकेश्वर थे.... V

गतांक से आगे...

प्रश्नोरा नागरों का दशपुर पर शासन

(इस प्रकार इस प्रश्नोरा नागर जाति दशोरा) ने दशपुर का शासन संभालने के बाद आठ सौ वर्ष तक शासन किया। ये दशपुर के किले में रहा करते थे तथा शिवना नदी के तट पर इनके धार्मिक कार्य सम्पन्न होते थे। वर्तमान पशुपतिनाथ की स्थापना भी इसी काल में हुई जैसा कि महाकवि कालिदास ने शाकुन्तल और कुमार संभव में भी वर्णन किया है जिसमें वर्तमान मूर्ति के रुप, रंग आदि का उल्लेख पाया जाता है।

इन वर्तमान पशुपतिनाथ को ही हाटकेश्वर माना जाता है। यह मूर्ति छः फुट ऊँची एवं अष्टमुखी है। ये आठों मुख शिव की आठ शक्तियों के प्रतीक हैं तथा इन आठों मुखों से अलग-अलग भाव व्यक्त होते हैं। गुजरात में रहने वाले नागर अष्टकुल के थे जिसके कारण ही इन्होंने अपने इष्टदेव हाटकेश्वर की अष्टमुखी विशाल मूर्ति बनवाई। यह मूर्ति देश देशान्तर से मूर्तिकार बुलाकर तैयार करवाई गई थी। यवनों से नष्ट होने से बचाने के लिए इसे इन ब्राह्मणों ने शिवना नदी के जल में प्रवाहित कर दिया। यह मूर्ति खुदाई के समय सन् 1985 में प्राप्त हुई जिसकी शिवना नदी के किनारे ही मंदिर बनवाकर पुनः 1962 ई. में प्रतिष्ठा की गई। अब ये हाटकेश्वर दशोरों के ही इष्टदेव न रहकर सम्पूर्ण भारत के अराध्य देव हो गये जिनके दर्शनार्थ देश-देश के शिवभक्त और पर्यटक आते रहते हैं। यह मूर्ति उस समय के दशोरा शासन का अकाट्य प्रमाण है। इतिहास की अनभिज्ञता के कारण लोग इसे पशुपतिनाथ की मूर्ति मानकर पूजा आराधना करते हैं। ऐसी विशाल अष्टमुखी मूर्ति भारत में अन्यत्र नहीं है। यहां इसी के अनुसार भव्य मंदिर भी रहा होगा जिसे यवनों ने नष्ट कर दिया।

इस दशोरा जाति का यहां शासन धर्मपूर्ण और प्रजा पालन तत्पर के रुप में था। जनता सुखी और सम्पन्न थी तथा इस नगर का एक व्यापारिक केन्द्र के रुप में भी विकास हुआ था। इन्होंने यहां कई मंदिर बनवाये तथा आसपास के स्थानों में भी धर्म स्थानों की रचना की। चौमुखी तथा अष्टमुखी शिव की मूर्तियां इसी क्षेत्र में अधिक पाई जाती है। इनके शासन काल में स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला ने भी काफी उन्नति की। दशपुर के किले में पत्थरों की पच्चीकारी और शिल्पकला लकड़ी का काम उच्च कोटि का एवं कलात्मक है। ये सब तेरहवीं सदी के पूर्व की भारतीय कला के जीवंत उदाहरण हैं। इनमें से कई को धर्मान्ध यवन शासकों ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। यह काल दशपुर का स्वर्णकाल था। इस युग में संगीत एवं नृत्य की भी काफी उन्नति हुई क्योंकि भगवान शिव को प्रसन्न करने में नृत्य एवं संगीत का ही उनके भक्तगण सहारा लेते हैं। इस प्रकार यहां धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तीनों क्षेत्रों में काफी उन्नति हुई।

यह जाति मन्त्र विद्या में भी काफी पारंगत थी। कहा जाता है कि शिवना नदी में स्नान करते समय इनकी धोतियां आकाश में सूखती थी और इन्हें स्नान के पश्चात मन्त्र शक्ति से पुनः प्राप्त कर लेते थे।

दशोरा जाति प्रश्नोरा नागर ही है इन सब साक्ष्यों एवं प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि वर्तमान की यह दशोरा जाति प्रश्नोरा नागर ही हैं जिनके कुल, गोत्र, इष्टदेव आदि की समानता ही इसका प्रमाण है। किन्तु सभी प्रश्नोरा नागर दशोरा नहीं हैं बल्कि इनका वहीं वर्ग जो मन्दसौर (दशपुर) गया था तथा वहां से अलाउद्दीन के आक्रमण के बाद अन्य स्थानों पर यथा मालवा, मेवाड़ आदि में बस गया वही दशोरा कहलाने लगा। साथ ही सभी दशोरा भी प्रश्नोरा नागर नहीं है। आक्रमण के बाद मन्दसौर से अन्य जातियां भी वहां से बाहर चली गई। वे भी मन्दसौर में निवास के कारण अपने आपको दशोरा ही कहने लगे जिनमें दशोरा महाजन, दशोरा तेली, दशोरा तम्बोली, दशोरा बलाई आदि हैं। जो प्रश्नोरा नागर है वे अपने को दशोरा ब्राह्मण कहते हैं।

(शेष अगले अंक में)

प्रस्तुति- श्रीमती शीला दशोरा, इन्दौर

नवरात्री की शुभकामनाओं के साथ
हम शॉपिंग के लिये आमंत्रित करते है
इन्दौर एवं प्रदेशवासियों को
हेलो बेबी फेमेली शॉप क्लब
नवजात शिशु से नये-नये मम्मी-पापा तक
विशेषः गर्भवती महिलाओं के लिए गारमेंट और अंडरगारमेंट

न्यूबॉर्न शॉपीः बेसमेंट
बेबी वियर्स, बेबी राइड्स, स्वींग्स् (झुले), बेबी कॉट्स, स्ट्रालर्स, प्रॅम्स, वॉकर्स, फिडर्स, विप्पल्स, टिथर्स, रेटल्स, सुदर्स, ट्रेनिंग कप्स, बेबी कॉस्मेटिक्स, डायपर्स, रिकॉर्ड बुक्स आदि

किड्स शॉपीः ग्राउंड फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, टॉयज, साफ्ट टॉयज, डॉल्स, गेम्स, बुक्स, सीडीज एवं डीवीडीज आदि

टीनएजर्स शॉपी : 1st फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, बेग्स एंड पर्सेस आदि

मेन्स एंड वुमेन्स शॉपी : 2nd फ्लोर
गारमेंट, अंडर गारमेंट, नाइटवियर, फुटवियर, कॉस्मेटिक्स, इमिटेशन ज्वेलरी, बेग्स एंड पर्सेस, बेड शीट्स एवं कवर्स, टॉवेल्स आदि

रेस्टारेन्ट : 3rd फ्लोर
शीघ्र ही प्रारंभ

स्थान- हेलोबेबी हाउस, कोठारी मार्केट चौराहा, एम.जी. रोड़, इन्दौर फोन 2531107

कैसा रहेगा दिसम्बर माह

मेष- यह माह आपके लिए सामान्य लाभ एवं उन्नति दायक रहेगा कार्य क्षेत्र में सोच-समझकर निर्णय लें। अपनी भावनाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान करें। इष्टमित्रों की ओर से सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। यात्रा करते समय भोजन कम करें। भाई-बहनों के मतभेद उभर सकते है तर्क-वितर्क से बचें।

वृषभ- इस माह में आपके रूके हुए कार्य बन जाएंगे। मन में प्रसन्नता रहेगी। कार्यक्षेत्र में बदलाव की संभावना बनती है अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखें। वाणी पर नियंत्रण रखे। इष्ट मित्रों से संबंध बिगड़ सकते है। इस माह रुका धन मिलने के आसार बनते है। माता-पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित रहेंगे।

मिथुन- यह माह पूर्वार्द्ध की उपेक्षा उत्तरार्द्ध ज्यादा उन्नति दायक रहेगा लंबी दूरी की यात्रा करना पड़ सकती है। कार्य क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने से आजीविका आदि में उन्नत्ति होगी। धार्मिक क्रिया कलाप सम्पन्न करेंगे। अपने धैर्य तथा साहस को बनाए रखें। वाहन, सम्पत्ति खरीदने का विचार 15 तारीख पूर्व लें।

कर्क- यह माह आपके लिए संघर्षपूर्ण रहेगा। कार्यों को सावधानी से करें। अन्यथा बाद में पश्चाताप करना पड़ सकता है। खान-पान के प्रति संयम रखें। स्थानांतरण की संभावना बनती है। वाणी से किसी को कटु वचन न कहे विद्यार्थी वर्ग का पढ़ाई में मन कम लगेगा। पति-पत्नि के संबंध मधुर होंगे।

सिंह- यह माह आपके लिए शुभ सूचना लेकर आएगा। आप अपनी मेहनत से स्थिति को सुधारने का प्रयास करेंगे तो सफलता प्राप्त होगी। क्रोध पर नियंत्रण रखे। आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कर पाएंगे। माता-पिता से स्नेह प्राप्त होगा। पति-पत्नि के बीच ताल-मेल में कमी रहेगी।

कन्या- यह माह आपके परिवार में धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों के साथ प्रारम्भ होगा। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह साधारण रहेगा। धार्मिक कार्यों को करने में विघ्न बाधाएँ आएंगी। आय के नए स्त्रोत प्राप्त होंगे। सामाजिक कार्यों में संलग्न रहना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत अधिक करना पड़ेगी।

तुला- यह माह आपके जीवन में उतार चढ़ाव लेकर आएगा सहयोगियों से मतभेद हो सकते है। धन कमाने की आकांक्षा बढ़ेगी। विरोधी से सावधान रहे। अपनी कमजोरी को उजागर न होने दें। धन को संचय करने का प्रयास करें। लघु यात्राएं करना पड़ सकती है पति-पत्नि घरेलू समस्याओं से चिन्तित रहेंगे।

वृश्चिक- यह माह आपके लिए सामान्य रहेगा। संघर्ष करना पड़ेंगे। तब जाकर कार्य सम्पन्न होंगे। अधिक भावुक होकर कोई बड़ा निर्णय न लें, सोच-समझकर कार्य करें। वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा बना काम बिगड़ सकता है। शत्रुओं पर विशेष ध्यान दें। विद्यार्थी वर्ग के लिए माह शुभ रहेगा।

धनु- यह माह आपको अपनी योजनाओं को अमल में लाने का है। कार्यक्षेत्र में योजनाबद्ध रुप से परिवर्तन करेंगे तो सफलता प्राप्त होगी। इष्ट मित्रों का व्यवहार सकारात्मक रहेगा। संपत्ति क्रय विक्रय करने के लिए माह शुभ है। भावुकता से बचे। विद्यार्थी वर्ग नींद का त्याग करें तो उचित रहेगा। पति-पत्नि के यात्रा में आनन्द उठाने के योग बनते है।

मकर- यह माह आपके जीवन में उन्नत्ति एवं यात्रा के योग लेकर आएंगे इस माह आपके विदेश यात्रा एवं प्रवास के योग बन रहे है। आपके मित्र आपके कार्यों की प्रशंसा करेंगे। परन्तु सावधानी रखें उनमें कुछ आपके शत्रु भी होंगे जो आपके कार्यों में बाधाएं उत्पन्न करेंगे। माता-पिता का आशीर्वाद लेकर कार्य को गति दे। विद्यार्थी वर्ग के लिए माह शुभ रहेगा।

कुम्भ- यह माह आपको अपनी नकारात्मक सोच पर नियंत्रण रखने का है। स्वास्थ्य आपका सामान्य रहेगा। परिवारजनों से भावनात्मक संबंध मधुर होंगे। आकस्मिक धन लाभ के योग बन रहे है। जमापूंजी में वृद्धि की संभावना है। परिवार का असंतुष्टजन समस्या उत्पन्न कर सकता है। कोई बड़ी संपत्ति खरीदने का विचार न बनाएं।

मीन- यह माह आपके लिए लाभ एवं सुखकारक रहेगा। महत्वाकांक्षा पर नियंत्रण रखे। कार्य क्षेत्र में कुछ नया होगा। विदेश यात्रा के मार्ग में आने वाली बाधा दूर होगी। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें परिवार में ताल मेल बना रहेगा। समाज में मान सम्मान बढ़ेगा। शुत्र पक्ष की ओर से चिन्ताग्रस्त रह सकते हैं। विद्यार्थी वर्ग मास के उत्तरार्द्ध में सकारात्मक विचार रखें।

प्रत्येक शनिवार 12 से 2 एवं सोमवार 11 से 1 बजे तक विशेष कार्यक्रम 93.5 SFM पर अवश्य सुनें।

पं. विजय नागर (ज्योतिष परामर्शदाता)
235/ए, सुन्दर नगर मेन सुखलिया, इन्दौर
मो. 94250-67141, 94257-04668

सर्दियों में योग करिये और स्वस्थ रहिये

योग ऋतु विशेष के लिये नहीं है। योग प्रत्येक मौसम व दिन वास्ते लाभदायक है। ठंड के दिनों में योग के अनेक लाभ है-

1. सर्दी में ठंडी के कारण आर्थाइटिज, साइटिका में अधिक कष्ट होता है।
2. सर्दी के कारण कमजोर लोगों के शरीर व जोड़ों में दर्द शुरु हो जाता है।
3. सिरदर्द, माइग्रेन, गले की बीमारी भी सर्दी में अधिक होती है।
4. सर्दी,खांसी, एलर्जी वालों को इस मौसम में अधिक कष्ट होता है।
5. दमा व श्वास के बीमार को इस मौसम में अधिक कष्ट होता है।
6. जोड़ो का दर्द, गठिया के बीमारों को इस मौसम में अधिक कष्ट होता है।
7. ठंड के कारण टान्सिल्स संबंधी कष्ट अधिक होता है।
8. गर्दन दर्द, घुटने का दर्द, कमर दर्द वालों को सर्दी में दर्द अधिक बढ़ जाता है।
9. कमर दर्द, पीठ दर्द में भी सर्दी में अधिक कष्ट होता है।
10. छाती की बीमारी वालों को भी सर्दी में अधिक कष्ट होता है।

सर्दी में निम्नलिखित योग क्रियाएं अधिक लाभदायक है।

1. शरीर संचालन इसे क्रिकेट, टेनिस खिलाड़ी, (बॉडी वार्म, अप एक्सरसाइज) भी कहते है। इससे शरीर की पांव की उंगलियों से सिर तक (स्ट्रेच व रिलेक्स) खिचना व सिकुड़ना की क्रिया होती है। इससे पांव दर्द, घुटना दर्द, कमर दर्द, सिर दर्द, गठिया, जोड़ो का दर्द, साईटिका, माइग्रेन, आर्थाइटिक आदि में लाभ होता है। शरीर संचालन निम्नलिखित विधि से किया जाता है।

शरीर संचालन बाडी वार्म अप

1. सीधे बैठकर मन को सांस के साथ मन को क्रियाओं के साथ रखना चाहिये। पहले पांच की उंगलियों को 5 वक्त नीचा व ऊंचा चलाना।
2. फिर पांव को एडी पर रखकर पूरे पांव को नीचे ऊपर चलाना।
3. दोनों पांव मिलाकर दोनों पांवो को दाहिने व बायें 5 वक्त चलाना।
4. घुटनों को जमीन से चिपकाकर उपर नीचे 10 बार करना।
5. दाहिना पांव बाये पांव पर रखकर बीच में से पकड़कर उसे दाहिने बांये 5-5 बार घुमाना। दाहिने पांव को पेड में रखकर उसके घुटने को जमीन पर नीचे की ओर करना 20 वक्त।

6 (ब). यही क्रिया बांये पांव से दोहराना।

7. दोनों पांवो को बीच में से पकड़कर दोनों पांवों के घुटनों को ऊपर-नीचे 20-20 वक्त।
8. पद्मासन या पालको में बैठकर पेट से सांस लेना गर्मी में 10 से 15 सर्दी में, वर्ष में 20 से 30 या 50।
9. छाती से सांस लेना 5 वक्त।
10. कंधों से सांस लेना 5 वक्त।
11. फिर दोनों हाथों को सीधा रखकर हाथों की उंगलियों को उपर-नीचे 5 वक्त
12. उंगलियों को जोर से मुठ्ठी बनाना व छोड़ना 5 वक्त
13. दोनों मुठ्ठियों को दाहिने, बाये चलाना 5 वक्त
14. दोनों हाथों को सीधा रखकर कंधों पर लाना फिर से ले जाना - 5 वक्त
15. हाथों की उंगलियों को कंधों पर रखकर हाथों को दाहिने व बायें ले जाना।
16. गर्दन की हड्डी को छाती पर लगाकर दाहिने व बाये ले जाना। धीरे-धीरे - 5 वक्त
17. गर्दन को ऊपर-छत पर ले जाना नीचे लाना - 5 वक्त
18. गर्दन को धीरे-धीरे दाहिने बाये ले जाना - 5 वक्त
19. सीधा बैठकर सिर्फ आंखों को दाहिने व बांये ले जाना।
20. आंखों को उपर नीचे ले जाना - 5 वक्त
21. आंखों की पुतलियों को घुमाना दाहिने व बायें - 5 वक्त।
22. आंखों से सामने एक टक देखना आंखें झपकने लगे तब उन्हें बंद करके दोनों हाथों को मलकर हाथ की हथेली को धीरे से आंखों पर रखना 5 वक्त सांस से गहरी लेना व छोड़ना।
23. दाहिने हाथ के अंगुठे को सीधा हाथ करके देखना फिर हाथ के अंगुठे को धीरे-धीरे नाक के पास लाना व ले जाना - 5 वक्त।

24 शवासन- इन क्रियाओं में थकान लगने पर 5 या 10 वक्त पूरी सांस लेना व छोड़ना।

सर्दी में सर्दी, जुकाम, खांसी, गले की तकलीफ अधिक होती है। मौसम व वातावरण के अनुसार स्वस्थ्य शरीर में तापमान में परिवर्तन होते है। सर्दी में ताप को बनाये रखने के लिये ताप संचालन प्रक्रिया को अधिक ताप की जरुरत होती है। शरीर को प्रतिरोधत्मक प्रक्रिया यदि कमजोर हो जाए तो रोग के कीटाणु आक्रमण करते है, इससे उसमें जीतना कठिन हो जाता है।

प्रतिरोधात्मक शक्ति की कमी हो जाए तो सर्दी, जुकाम, छींक आना, आंखो का लाल होना, नाक बहना, सिरदर्द, माईग्रेन और शरीर में दर्द शुरु हो जाता है।

शरीरिक रोग मनोविज्ञान के अनुसार तनाव व चिंता से भी होता है। तनाव व चिंता को दूर करने के लिये योग सर्वश्रेष्ठ है। योगाभ्यास, व्यायाम, तीन किलोमीटर अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को तेज चलना चाहिये। अस्वस्थ और बीमार व्यक्तियों को डॉक्टर व योग विशेषज्ञ की सलाह से अपनी शक्ति के अनुसार प्राणायाम, ध्यान और शवासन करना चाहिये। सर्दी में निम्नालिखित आसन अधिक उपयुक्त रहते हैं।

(1) ताडासन (2) त्रिकोडासन (3) कोण आसन (4) अर्द्धलुलासन (5) सर्वांगासन (6) हलासन (7) सूर्य नमस्कार (8) मत्स्य आसन (9) पश्चिमोत्तासन (10) शशांका आसन (11) योग मुद्रा उल्टे लेटकर के (12) भुर्जुग आसन (13) सर्पासन (14) अर्द्ध सल्भासन (15) सल्भासन (16) धनुरआसन (17) नौकासन (18) सीव्हासन

प्राणायाम- (1) लंबी गहरी सांस लेना और छोड़ना बीस वक्त (2) योगेन्द्र प्राणायाम (3) नाडी शोधन प्राणायाम (4) सूर्यवीदी प्राणायाम (5) भस्त्रीका प्राणायाम (6) कपालभाती प्राणायाम (7) उज्जयी प्राणायाम अधिक लाभदायक रहते हैं।

शवासन, योगनिद्रा व ध्यान द्वारा हम उसे चेतन्य अवस्था को मन में लाते है। मन की चेतन्यता का मतलब हम श्वासन, ध्यान, योगनिद्रा द्वारा हम प्रमुख चेतनाओं में जाग्रत कर सकते है। इससे एकाग्रता बढ़ती है। बुद्धि तीव्र होती है। काम करने की शक्ति बढ़ती है। शारीरिक मानसिक बीमारियां ठीक होती है। जिस तरह से कार की बेटरी चार्ज होती है उसी तरह आसन प्राणायाम, ध्यान शवासन द्वारा मनुष्य का शरीर, मन मस्तिष्क चार्ज हो जाता है। शारीरिक व मानसिक रोगों से बढ़ने की प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ती है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन सड़क पर, छत पर, वरांडे में या बगीचे में दो से तीन किलोमीटर तेज चलना चाहिये।

प्रत्येक व्यक्ति को दिन में एक वक्त खुब जोरो से दिल खोलकर हंसना चाहिये। इससे फेफडे स्वस्थ रहते हैं और मनुष्य का तनाव दूर होकर हल्कापन लगता है। प्रत्येक मनुष्य को कम से कम सोने के दो घंटे पूर्व रात का भोजन करना चाहिये।

भोजन में सर्दी में - (1) प्रोटीन- दूध, दाल, गेहूं की रोटी, मटर, मुंगफली और फल लेना चाहिये।

(2) कार्बोहाड्रेटस- शक्कर, स्टार्च, दूध, शहद लेना चाहिये। विशेष बीमारी में शक्कर की मात्रा कम खायी जाती है।

(3) चिकनाई- मक्खन, घी, फल, हरी सब्जी, दाल लेना चाहिये।

(4) विटामिन सी- खट्टे फल, हरी सब्जी, नींबू, संतरा, आंवला लेना चाहिये।

(5) मिनरलस् - दूध बंद गोभी व गाजर में मिलता है।

(6) लोहा- हरी सब्जी, पालक, मैथी, मूली भाजी, चंद्रोई भाजी में मिलता है।

(7) पानी- स्वस्थ रहने के लिये मनुष्य को कम से कम नौ ग्लास अर्थात तीन लीटर पानी पीना चाहिये। गर्मी में यह मात्रा दुगुनी हो जायेगी।

(8) पेट पेटी आल्मारी क्षमता से अधिक नहीं भरना चाहिये। भूख से आधा भोजन करना चाहिये। दूगुना पानी पीना व चौगुना हवा वास्ते स्थान रखना चाहिये.

ए.के. रावल
योग विशेषज्ञ
25 पत्रकार कालोनी (साकेत) फोन 2565052

जीवन की सार्थकता

मनुष्य समाज में रहता है इसलिये उससे ऐसी अपेक्षा की जाती है कि उसके व्यवहार और आचरण से उसका अपना कल्याण और लाभ हो तथा समाज को भी कोई नुकसान न पहुंचे। मतलब यह कि उसके जीवन में कुछ न कुछ मर्यादा और हदें होना जरुरी है। घर परिवार और समाज में रहते हुए क्या करना चाहिए, क्या नहीं, यही नैतिकता है। पर आज नैतिक आचरण को हर कोई धता बताकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है। प्रतिदिन घटने वाली अनेकानेक घटनाएं बताती है कि हमारा जीवन स्तर जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा है हम जितना अधिक माडर्न होते जा रहे हैं वैसे ही हमारे नैतिक स्तर में गिरावट आती जा रही है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार जो नीति सम्मत नहीं है वह पाप है। इसका मतलब है कि जिन कार्यों और व्यवहार से व्यक्ति और समाज का नुकसान या विनाश हो सकता है वे अनैतिक है। आज व्यक्ति स्वच्छन्द होकर जीना चाहता है। नीति नियमों को ताक पर रखकर मनमर्जी से जीवन बिताना चाहता है। संसार में हम जहां भी नजर डालते हैं, हर काम किसी न किसी नियम के अनुसार होता दिखाई देता है। प्रकृति के अपने नियम होते हैं। प्रकृति अपने नियमों को तोड़ दे तो बाढ़, भूकम्प और तूफान विनाश का संदेश लेकर आ जाते हैं। घर के, सड़क के, व्यापार व्यवसाय के, खेलकूद के, आफिस के, संस्थाओं के, रेल-बस से यात्रा करने के अपने नियम होते हैं, हर देश का अपना संविधान होता है, कानून होता है, जिनका पालन वहां के नागरिकों को करना पड़ता है। पर आज की विचित्र विडम्बना यह है कि हम नियमों का पालन करना अपमान की बात समझने लगे हैं। जो जितना नीति-नियमों को, कानूनों को तोड़कर अपनी वाली चला सकता है, वह उतना ही बड़ा समझा जाता है। हम स्वच्छंद विचरण करना चाहते हैं। नीति-नियमों को फटे-पुराने कपड़ों की तरह फेंक देना चाहते हैं। यदि कोई ऑटो चालक या बस कंडक्टर, आटो रिक्शा या बस में पड़े रह गये पर्स या सूटकेस को उसके मालिक को लौटाने का सौजन्य दिखा देता तो खुद पर्स या सूटकेस का मालिक ही उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगता है और मीडिया के लिये भी वह 'खबर' बन जाती है।

माता-पिता की सेवा, समाज के विकास या जरुरतमंदों की सहायता के बजाए छोटी-मोटी सुविधाओं को पा लेना ही आज हमारा प्राथमिक कर्त्तव्य बन कर रह गया है। इसलिये आज हमारे संपर्क में आने वाले का असली चेहरा कौन-सा है, पता नहीं चलता है। अपने माता-पिता के लिए पेटभर उनके मन-पसंद खाने-पीने की व्यवस्था करना या दवाई और कुछ दूसरी आवश्यक चीजों को उपलब्ध कराने के लिए पैसे नहीं होने का कुछ लोग बहाना बना लेते हैं, पर क्लब, सिनेमा, किटी पार्टियों के लिए उनके पास बड़ी सहूलियत से पैसे निकल आते हैं। यहां तक कि वह इतना स्वार्थी हो गया है कि अपने वृद्ध माता-पिता को अपने साथ रखना भी गवारा नहीं करता है।

वर्तमान में मूल्यों के संकट का दौर चल रहा है और आदमी धन को ही भगवान समझता है। एक दूसरे के साथ मिलकर समस्याएं सुलझाने और सुख-शांति से रहने के बजाए एक दूसरे की टांग खींचने की योजना बनाना अधिकतर लोगों का पसंदीदा शगल बनता जा रहा है। आदमी के पास पैसा है, कार, बंगला, ऐश्वर्य विलास की सारी चीजें विद्यमान है, पर फिर भी कहीं अंदर से वह बेचैन है। आज वह ऐसे खोखले बक्से की तरह होकर रह गया है जिसकी पैकिंग व बाहरी सजधज तो बहुत आकर्षक है,पर अंदर सड़ांध, बदबू, सांप के जहरीले दांत, बिच्छू का डंक, लोमड़ी की चालाकी, भेड़िए की क्रूरता और सियार सी मतलब परस्ती भरी हुई है। ऐसे ही परिणामों के मद्देनजर भौतिकवादी पाश्चात्य सभ्यता को नकारते हुए गांधीजी ने बिलकुल सही भविष्यवाणी की थी कि पश्चिमी सभ्यता शरीर सुख को जीवन की सार्थकता मानती है, इसलिए इसमें लोग अपने हाथों सुलगाई आग में जल मरेंगे।

आशा नागर
सी-12/9, ऋषि नगर,
उज्जैन (म.प्र.)
फोन 0734-2521157

सदा आशीर्वाद रहे, आपके सानिध्य का

सूर्य सी आत्म निर्भरता
चन्द्र सी दूरदर्शिता
जल सी निर्मलता
पवन सी कोमलता
धरती सी आत्मियता
अंश हो आपके व्यक्तित्व का
सदा आशीर्वाद रहे
आपके सानिध्य का
शुभ-शुभ-शुभ कामना
मुकुल व्ही मंडलोई, इन्दौर
फोन 2484370

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

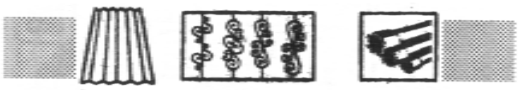

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट, दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578, मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।
फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध
R.K. Dave (Pappu)

संस्कृति दर्शन- हेलारी (कजली) तीज

बांसवाड़ा। यहां बालविवाह के रुप में माता और जोड़े देखकर चौंकिये मत। यह कोई वास्तविकता में बालिका वधु और बराती घराती नहीं है वरन् यह तो संस्कृति दर्शन का वह दृश्य है जो नागरवाड़ा बांसवाड़ा से हेलारी तीज कजली तीज पर मंचन हुआ है। सर्वत्र इसे विचित्र वेषभूषा के नाम से जाना जाता है। सभी आयोजनों, कथाओं चल झांकियों में बच्चों को सजाकर बिठाया जाता है शालाओं में भी जन्माष्टमी पर सभी बालक बालिकाओं को राधा कृष्ण स्वरुप दिया जाता है। यह पालकों के लिये अत्यन्त आनन्ददायी अनुभूति होती है और बालक-बालिकाओं के लिए संस्कारों का पूंज। प्रस्तुत चित्र में अक्षी (चारली चेपलीन) नीराली (परी) द्राक्षा (भगवती अंबिका) के रुप में प्रस्तुत है तो काम्या (कन्यादान हेतु तत्पर माता उर्वि और उर्जा जुड़वा बहने लग्न मण्डप में पति-पत्नी) और कृति (श्री श्री रविशंकर से सुसज्जीत है।) नयनाभिराम झाकियां वहां की संस्कृति को जिवन्त बनाये हुए है असली घोड़े पर बैझिझक बैठी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को वर्षों तक लोग नहीं भूला पायेंगे। वहां राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान का भी ग्रुप था तो राधाकृष्ण की मोहक मुरत भी। महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली दुर्गा के रुप में बच्चों-बच्चियों को देखकर मन प्रसन्न हो गया शायद ही किसी घर की कोई बच्ची वहां सजधज कर आने से रही हो। साथ में माता, दादी और परिवार की सभी महिला सदस्यों से पूरा हाटकेश्वर मंदिर का प्रांगण चमक उठता है।

यह हेलारी तीज व्रत का भाग है जिसमें दो वर्ष की उम्र में 1000 अखण्ड चावल से आरम्भ करके आठवे वर्ष 7000 चावल का तय आहार और फल दिये जाते है परन्तु समय के साथ किसी को एक बैठक में बिना नमक यह आहार लेना संभव नहीं लगता तो फल और सूखे मेवे मिठाइयों और रबड़ी का सहारा लिया जाता है इस पूरे प्रसंग की वीडियो उतारी जाती है। और बांसवाड़ा के स्थानीय चैनल और गोल्डी हरिओम स्टूडियो द्वारा उसका प्रसारण किया जाता है जिसमें सभी को भी नयनाभिराम झाकियों का आनन्द प्राप्त होता है। यह त्यौहार भाद्रपद कृष्णपक्ष की तीज को मनाया जाता है।

प्रस्तुती- अभिलाषा अमीत त्रिवेदी
बांसवाड़ा मो. 9413947938

नव नौ का आदर्श

आदिकवि ने शुरु की
वन्दना महाकाल की।
अहसास से हृदय भरा
क्रौंच व्यथा तत्काल की ।।

समय बीता शुरु हुआ
अर्चन कालिदास का।
भाव विव्हल श्रृंगार था
महाकाल विन्यास का।।

कनिष्ठिका आसीन था
महाकाल का ये दास।
मां कालि का वरद था
महाकवि कालिदास ।।

कालगणना के दौर में
कवि 'सुमन' भी आगये।
शिव मंगल में हो अर्पित
कलि काल में समा गये।।

महाकाल का एक पल
प्रचलित है अविकल
गिनती करके चुक गये
फिर भी जारी है हलचल।।

इसी गणना में आ रहा
नव वर्ष भाव विभोर।
नव नौ की नवीनता से
मंगलमय चित चोर।।

नहीं दिखता है, लेकिन होता है...

भले ही भौतिक चीजों का
बदलाव नहीं दिखता है
लेकिन होता है
भले ही मानव स्वभाव का
बदलाव नहीं दिखता है
लेकिन होता है
भले ही आतंक का चेहरा
सिमटता नहीं दिखता है
लेकिन होता है
भले ही सृजन का अंदाज
आकलन नहीं दिखता है
लेकिन होता है
भले ही समय का चलन
गतिगामी नहीं दिखता है
लेकिन होता है
प्रमाण गतिशील समय का
नव वर्ष का आना होता है
आओ मिलकर स्वागत करें
नव वर्ष का
परिवर्तन के दौर में मिले
इस हर्ष का
वर्ष नव का परिचायक है
पूरा वर्ष
नव रस से पूर्ण हो मंगलमय नववर्ष

-व्रजेन्द्र नागर इन्दौर

डाकघर की विभिन्न बचत योजनाओं में निवेश कर आकर्षक लाभ कमायें

किसान विकास पत्र ❐ छह वर्षीय बचत पत्र ❐ सावधी जमा ❐ ५ वर्षीय आर.डी. खाता ❐ मासिक आय योजना ❐ लोक भविष्यनिधि खाता ❐ वरिष्ठ नागरिक बचत योजना ९ प्रतिशत ब्याज

सम्पर्क सूत्र- डाकघर बचत अभिकर्ता, कृष्णकांत शुक्ल
सी-५९, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड़, उज्जैन फोन २५११८८५, मो. ९४२५९-१५२९२

जिस दिन उपभोक्ता विज्ञापन की गुगली खेल लेंगे, ठंडे से मुक्ति मिल जाएगी

गतांक से आगे....

भाई झटका बहुत जोर का लगता है, पर बहुत धीरे से, आपको तो अहसास ही नहीं होता, जो घर बैठे हैं उनके दिल से पूछो क्या बीतती है? ऐसा नहीं है कि सिर्फ हम जैसे कुछ सिरफिरे ही नक्कार खाने में गला फाड़ रहे हैं। हमारी तूती की आवाज से अमरीका और स्वीडन तक के कानों पर जूं रेंग गयी है। स्वीडन में ठंडे पर रोक लग चुकी है। अमरीका के केलिफोर्निया प्रान्त में विधेयक पारित करके सभी स्कूल, कालेजों में ठंडे की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। मिन्नेसोटा, मिशीगन, रटजर्स सहित कई विश्वविद्यालयों के परिसर में ठंडा प्रतिबंधित है। हजारों प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के अमरीकी स्कूलों में ये नहीं बेचे जाते हैं। भारत में भी महाराष्ट्र के कई स्कूलों के अलावा अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई, जाकिर हुसैन कॉलेज दिल्ली, श्रीराम लेडी कॉलेज इत्यादि के केम्पस ठंडा मुक्त क्षेत्र बन चुके हैं। और बने भी क्यों नहीं? आखिर इनके मुकाबले देशी पेयों में कमी क्या है? नारियल पानी, नीम्बू पानी, शिकंजी, केरी की छाछ, गन्ने का रस, दूध, लस्सी, जलजीरा, ठंडाई के अलावा सैकड़ों तरह के शरबत न केवल पौष्टिकता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहतर है बल्कि प्रकृति पर्यावरण को बिना नुकसान पहुचाये हजारों-लाखों के लिए रोजगार सृजन का साधन भी बनते हैं।

दाद देनी पड़ रही है विज्ञापन बनाने वालों को जिन्होंने इस निकृष्टतम वस्तु को ''स्टेटस-सिम्बल'' के रुप में इस तरह स्थापित किया कि पूरा समाज गर्व और आत्म संतोष के साथ इसका सेवन उचित मानने लगा हैं। दरअसल **बाजारवाद के मैदान में विज्ञापन की गुगली को खेलने की तकनीक अभी उपभोक्ता सीख ही नहीं पाये हैं। जिस दिन सीख जायेंगे ठंडे का कड़वा सच मीठा बन कर गले के नीचे उतर नहीं पायेगा।**

अंग्रेजों के दस्तावेज पुष्टि करते हैं कि 1840 तक देश में दूध बेचना पाप माना जाता था। आज यहीं पर धरती को बांझ, समाज को जल बिन सून और शरीर को बीमार करने वाले ठंडे जहर की दूध से दुगुनी कीमत पर धड़ल्ले से हो रही बिक्री विकास की दिशा और दशा पर यक्ष प्रश्न है। माना कि ''आजादी दिल की'' जरुरी है पर ''गुलामी दिमाग की'' इतनी गहरी भी न हो कि सोच ही नपुंसक हो जाये। सच सामने सुरसा सा खड़ा दिख रहा है, फिर भी कुछ करोड के बदले डॉ. आमिर खान के ''ठण्डा 100 सुरक्षित'' होने के सर्टिफिकेट की असत्यता पर क्रोध नहीं आता है। चौराहे पर दिख रहे सफेद झुठ पर शतुरमुर्गी प्रतिक्रिया किस कमजोरी की कोख से जन्म लेती हैं। नई पीढ़ी की ये नई उमंग क्यों नहीं हैं वैज्ञानिक सच के संग। डॉ. शाहरुख खान की आखों पर तो करोड़ों का पर्दा पड़ा है वरना माँ के दूध में जहर होने की बात करने से पहले पता लगा लेते कि पाउडर दूध के आविष्कारक देश अब खुद माँ के दूध को सर्वश्रेष्ठ मानने लगे हैं। युरिया, डालडा और कई दवाओं के मामले में बैकफुट पर जाकर माफी मांग रहे हैं ये देश। शाहरुख भाई को मालूम नहीं है कि पश्चिम का लगभग हर उत्पाद हर तकनीक प्रकृति विरोधी है। हर जगह रसायन, यूरिया, प्रिजरवेटिव्स की भरमार मजबूरी हो गयी है। अब माँ को आप बार-बार ये सब चीजें खिलाओगे तो कुछ अंश तो दूध में भी जायेगा ही।

दोष शाहरुख और उन जैसे विज्ञापन कर रहे सेलीब्रिटीस का भी है एवं हमारा भी जो आधुनिक (?) समाज का हिस्सा बनने के लिए बिना सोचे समझे अंधानुकरण करने लगते हैं। उच्च शिक्षितों के बनाये आधुनिक, जागरुक वर्ग को ही पहल करनी होगी। अगर सब कुछ जानकर भी ध्यान न दिया जाये तो हम तो सिर्फ इतना ही कहेंगे। आधुनिक (?) व्यक्ति या समाज और उसके माध्यम से अन्ततः राष्ट्र द्वारा....

बूंद-बूंद-खुदकुशी, वह भी खुशी-खुशी।

प्रस्तुती- संजीव झा
सी-50, तलवण्डी, कोटा 324005 (राजस्थान) मो. 09414966414

शिव जोशी
मो. 98265-74147

।। श्री गणेशाय नमः।।

शैलेष जोशी
94240-53997, 9977237237

नया वर्ष आपके लिए मंगलमय हो

लायन शिव जोशी
श्रीमती सुशीला जोशी

शैलेष जोशी (पूर्व पार्षद)
श्रीमती मोनिता जोशी

हर्षिता, आज्ञा, राज जोशी

प्रतिष्ठान- जोशी स्टेशनरी, रिचार्ज, स्टोर्स- 42/10 स्टेशन रोड़, राऊ फोन 2856515,

❁ मून मिशन ❁

प्रधानमंत्री, अमेरिका के नए राष्ट्रपति बराक ओबामा से- चन्द्रयान की सफलता के बाद हम चांद पर इंसानों को भेजेंगे।

ओबामा- कितने लोग जाएंगे?

प्रधानमंत्री- 2 ओबीसी, 3 एसटी, 3 एससी, 3 खिलाड़ी, 5 राजनेता और संभव हो तो एक अंतरिक्षयात्री भी।

❁ रासायनिक नाम ❁

पानी का रासायनिक नाम

टीचर- पानी का रासायनिक नाम बताओ?

छात्र- जी मैडम, एच,आई,जे,के,एल,एम,एन,ओ!!

टीचर- यह क्या बकवास कर रहे हो?

छात्र- जी आप ही ने तो कल बताया था 'एच टू ओ'

❁ कमल का फूल ❁

एक लड़के ने एक लड़की को गिफ्ट में कमल का फूल दिया। लड़की ने उसे एक जोरदार चाटा मारा।

लड़का- तुमने मुझे चाटा क्यों मारा?

लड़की- तुमने मुझे बीजेपी की निशानी (चिह्न) दी है, तो मैंने तुम्हें कांग्रेस की।

❁ इंटीरियर डिजाइनिंग ❁

एक- सुना है, तुम्हारी पत्नी ने इंटीरियर डिजाइनिंग का कोर्स किया है?

दूसरा- बिल्कुल सही सुना तुमने, इसलिए अब मुझसे छुटकारा चाहती है, क्योंकि अब मैं फर्नीचर व पर्दों से मैच नहीं करता।

❁ कंजूस ❁

खुदी को कर कंजूस इतना कि हर एसएमएस से पहले सर्विस सेंटर खुद पूछे- बता इसकी वजह क्या है!

❁ गर्लफ्रेंड ❁

वही जो टोक-टोक कर दो साल में आपकी आदत बदल दे

और दो साल बाद कहे...

तुम अब पहले जैसे नहीं रहे!

❁ सोचो-सोचो! ❁

यह मत सोचो कि तुम्हारे गर्लफ्रेंड या बॉयफ्रेंड या पति या पत्नी ने तुम्हें कितना रोमांटिक मेसेज भेजा। बस इतना सोचो कि उसे यह मेसेज किसने भेजा होगा।

❁ मासूम ❁

पति- क्या बताऊं, आज चोर ने मेरी घड़ी, पैसे और चेन लूट ली।

पत्नी- तो क्या आपके पास पिस्तौल नहीं थी?

पति- हां थी तो, पर गनीमत है कि उस पर चोरों की नजर नहीं पड़ी।

❁ अदा! ❁

आदत और अदा में बस इतना ही फर्क है

जैसे सड़क के नल पर पानी

गरीब पिए तो आदत अमीर पिए तो अदा

अब एसएमएस को ही ले लो

हम करें तो आदत

आप करो तो अदा!

❁ पत्नीव्रता ❁

डाकुओं ने उसको एक धमकी भरी चिट्ठी भेजी- अगर आपने हमें एक लाख रुपए नहीं दिए, तो हम आपकी बीवी को उठाकर ले जाएंगे।

उसने जवाब भेजा- मुझे डर है कि शायद मैं अपना काम न कर पाऊं, पर उम्मीद है कि आप अपना वादा जरुर पूरा करेंगे।

❁ चप्पल ❁

लड़की को सामने से आता हुआ देखकर लड़का सीटी बजाता है।

तमतमाकर लड़की ने कहा- चप्पल निकालूं क्या?

लड़का- मेरा दिल कोई मंदिर थोड़े ही है, तुम चप्पल पहनकर भी आ सकती हो।

❁ पेट्रोल पम्प ❁

पत्नी- चलो आज किसी महंगी जगह चलते हैं।

पति- चलो।

पत्नी- लेकिन कहां?

पति - पेट्रोल पम्प।

❁ वाह भई वाह ❁

सॉफ्टवेअर कंपनी में इंटरव्यू देने गए लड़के से जब मालिक ने पूछा- आपको एमएस आफिस मालूम है क्या?

लड़का- जी अगर अड्रेस देंगे तो जा के आऊंगा।

❁ बेवकूफ ❁

पुरुषों को बेवकूफ बनाने की जरुरत नहीं ज्यादातर तो होते ही हैं और बाकी डू-इट-योरसेल्फ टाइप्स होते हैं।

-श्रद्धा शर्मा

निरज (अन्ना) **मो. 98261-37523**

स्क्रेप डीलर्स

सागोर कुटी चौराहा पीथमपुर सेकर-3

यो लेन-देन को सौदो है

म्हारे ऐसो लगे के अच्छी-अच्छी बात सब करे ने जद व्यवहार में लेने की बात आय तो उससे मुकरी जाय। पिछला दिन बेटा का इलाज में जादा पईसा लगी ग्या तो वी केने लग्या के यो लेन-देन को सौदो है। तम हर बात में ऐसोई क्यों नी सोचो? दूसरा से तमारी नरी उम्मीद होन है, तमारी बारी आय तो तम पीछे हटी जाव, चाय प्यार की बात होय या त्याग की, सम्पर्क की होय या सम्बंध की, मदद की होय या सहयोग की। तम जितरो करोगा उतरो वापस मिली जायगो। तम कई करो के दूसरा का लिए कई करो नी, ने उससे आशा नरी रखी लो।

मां भी रोया बगेर बेटा के दूध न पिलाय। बिना बोए तम काटने की आशा क्यों करो? जबकि भगवान कृष्ण ने कियो है के कर्म करो ने उका फल की चिंता मत करो। तमारे फल की चिंता पेला रे, तम काम तो बाद में शुरु करो। म्हारो ऐसो मत है के कोई को भलो या परोपकार करने का बाद भी तम उससे कोई आशा मत करो। कारण के नरा लोग नुग्रा रे, वी करिया धरिया को मान नी दे। पर तम तो सबको भलो सोचता रो ने करता रो क्योंकि तमारी भलई को बदलो तमारे भलई में मिलेगा। म्हने देख्यो है के नरी बईरा होण ने मन मारी के अपनी सास की सेवा करी, उनकी सास होण उनसे कदी खुश नी री लेकिन सेवाभावी बऊ होण जद सास बणी तो उनकी बऊ होण ने उनकी खूब सेवा करी ने आदर्श बऊ साबित हुई। ऐसो है के तमारी अच्छई को बदलो तमारे अच्छई से ई मिलेगा भलई उनमें देर लगी जाय। नरी बार तम लोग होण को तीन-चार बार भलो करी दो ने पांचवी बार किना कारण से नी करी पाव तो सामने वालों बुरो मानी जाये ऐसा में तमारो दिल भी दुखी जाये के देखो मैंने हमेशा इकी मदद करी ने एक बार नी करी पायो तो यो बुरो मानी ग्यो। यो संसार ऐसोज है। भलई को बदलो जो भलई से नी दे तो ऐसा नुग्रा होण को बदलो फिर भगवान चुकाय। इना संसार में कर्म करी के पैसो तो कमई सको पर प्रतिष्ठा ने नाम कमाने का वास्ते दूसरा की भलई करनीज पड़े। ऐसा में अच्छा-बुरा को भलई -बुरई को सोच छोड़ी के अच्छा काम करता रो ने कई भी सोचो मत। भगवान सब देखी रियो है, उ तमारे अच्छो ज फल प्रदान करेगो। जद तम दूसरा को भलो सोचो ने करो तो समझो के भगवान को काम करी रिया हो, उ दे के नी दे भगवान तमारे उको फल जरुर देगा ज देगा। यो लेन-देन को सौदो है इंसान नी देगा तो भगवान देगा। **प्रभा शर्मा मो. 9425902495**

घर की परिभाषा

दो अक्षरों से मिलकर बना है एक शब्द घर
घर नहीं होता जहां चार दिवारे, एक छत
या दो-चार दरवाजे या खिड़कियां हो।
घर वो होता है जहां प्यार की ठंडक हो
रिश्तों की गरमाहट हो और खुशियो की बरसात हो।
घर वो होता है जहां मर्यादा का पालन
कर्तव्य की डोर से आपसी रिश्ते बंधे हो
जहां घर का हर सदस्य घर की इज्जत,
प्रतिष्ठा, मान-मर्यादाओं के लिए अपने-आप
को समर्पित करे। उसी जगह का नाम होता है घर
एक आदर्श घर वही होता है जो
हर दिल में घर कर जाए।

-पुष्पा मेहता
नागर समाज, उपाध्यक्ष, रतलाम,
मो. 9229877731

चाणक्य नीति

1. धोखा और झूठ अधिक समय तक नहीं चलते ।
2. अपने भाईयों, सगे-संबंधियों के बीच में गरीब और छोटा बनकर रहने से तो अच्छा है कि उस जंगल में जाकर रहने लगे जहां पर बड़े-बड़े हाथी रहते हो, बाघ रहते हों। खाने हेतु केवल पत्ते और पीने के लिए तालाबों का पानी ऐसे स्थान पर आपको अधिक सुख मिलेगा क्योंकि छोटा-बनकर रहने से आदमी को स्वयं से ही घृणा होने लगती है।
3. ब्राह्मण एक वृक्ष के समान है। उसकी जड़ संध्या है। दान शारदा है। पत्ते धर्म कर्म है।
4. ज्ञानी वही होता है, जो भोजन की चिन्ता नहीं करता।
5. जब आपके बेटे बड़े हो जायें तो उन्हें भी अपने मित्र समान समझें।
6. सौन्दर्य वहां जहां समता है कहीं विभेद का नाम नहीं।
7. हर जन्म से पांच पिता होते है-
1. जन्मदाता, 2. यज्ञोपवित, 3. संस्कार कराने वाला, 4. विद्या देने वाला, 5. संकट में प्राण रक्षा करने वाला।
8. पुरुष के चार शत्रु है-
1. कर्जदार पिता, 2. चरित्रहीन मां, 3. सुन्दर पतित औरत, 4. मूर्ख औलाद।
9. मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं।
10. प्राणी जैसा कर्म करता है, वैसा ही उसे फल मिलता है।

प्रस्तुतकर्ता- श्रीमती विद्या नागर, नीम वाड़ी, शाजापुर

सम्पादकीय

प्रतिक्रिया एवं प्रोत्साहन चाहिए

मासिक जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन समाज बंधुओं में एकता एवं सद्भाव बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया है, निश्चित ही ईमानदार इरादों की नींव के साथ जो इमारत तैयार हुई वह अपनी सफलता की कहानी स्वयं कहती सी प्रतीत होती है। जगह-जगह की गतिविधियों के प्रकाशन से वहां की सक्रियता का जायजा पूरे समाज को मिलता है, साथ ही संबंधों को बढ़ाने का सिलसिला जो शुरु हुआ तो वह सफलता पूर्वक जारी है। जनम,परण और मरण विधि के हाथ है, हम केवल माध्यम बन सकते हैं। हमारे प्रयासों से नए रिश्ते जुड़े हैं वहीं जन्मदिन की बधाई के फोन की संख्या बढ़ गई है। हमारे दिवंगत परिजनों की स्मृति को चिरस्थाई करने का प्रयास भी गति पकड़ रहा है। इन सब के साथ खटकने वाली बात यह है कि प्रतिक्रिया एवं प्रोत्साहन के मामले में समाजबंधु अभी भी कंजूसी कर रहे हैं। पत्रिका में लेख एवं बधाईयों के साथ फोन या मोबाईल नं. प्रकाशित करने का यही उद्देश्य है कि चर्चाओं का दौर शुरु हो- सम्पर्क से संबंध कायम होने के पुनीत कार्य शुरु हो। जिन नागर व्यक्तित्व का परिचय प्रकाशित किया जावे वे कम से कम एक फोन करके धन्यवाद तो दें। सुधार हेतु सुझाव तो दें। हमारा प्रयास पवित्र था तभी तो सफलता मिल रही है परन्तु प्रतिक्रिया एवं प्रोत्साहन के खाद-पानी की कमी अखर रही है। इस अंक में उज्जैन पर केन्द्रित लेखों का प्रकाशन किया जा रहा है। आगामी अंक में उज्जैन निर्देशिका का प्रकाशन किया जा रहा है। म.प्र. में उज्जैन, शाजापुर, रतलाम, इन्दौर, खंडवा आदि जिले नागरों के गढ़ है। यहां के विवरण एवं निर्देशिकाएं आगामी अंकों में प्रकाशित किए जाएंगे। इसके पश्चात अन्य राज्यों की नागर निर्देशिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया जाएगा। केवल आकर्षक एवं उपयोगी चीजों को आत्मसात करने का मानव स्वभाव है, और ये दोनों चीजें जय हाटकेश वाणी में मौजूद है।

-संगीता शर्मा

विनम्र अनुरोध-

ज्ञातव्य है कि जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन प्रतिमाह 6 तारीख को किया जाकर डाक प्रेषित की जाती है। उन सभी सदस्यों को पत्रिका नियमित भेजी जा रही है, जो 250 रु. जमा कर तीन वर्ष के लिये सदस्य बन चुके है। डाक विभाग की लापरवाही से यदि आपको पत्रिका प्राप्त न हो तो कृपया सीधे कार्यालय (0731) 2450018 पर फोन करें। पत्रिका प्राप्त न होने पर पुनः भेजी जाती है। आपके शहर में समाज की गतिविधि से सम्बंधित समाचार एवं फोटो अवश्य भेजें उनका प्रकाशन किया जाएगा जबकि वैवाहिक, जन्मदिन, पुण्यतिथि एवं बधाई सम्बंधि समाचार केवल सदस्यों के ही प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका का प्रकाशन समाज को जागरुक बनाने तथा आसपास चल रही गतिविधियों से वाकिफ कराने के लिए है अतः पूर्णतः सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें। **- सम्पादक**

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं.....

पूरा पता (पिनकोड सहित).....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/-रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

स्वयं को स्थापित कर शिखर तक पहुंचे श्री विष्णुप्रसादजी नागर

उज्जैन। स्व. विष्णुप्रसादजी नागर एक अनमोल नेक शख्सियत एक अनोखे व्यक्तित्व वाले नागर रत्न थे। सदैव हर स्थिति में खुश रहने वाले, गंभीर व हंसने-हंसाने वाले सबसे वार्तालाप करने वाले व्यक्ति थे। वे सत्यवादी, कर्मठ, कर्त्तव्य निष्ठ, ईमानदार नियम समय के पाबन्द थे। सबका भला चाहने वाले व किसी की बुराई सुनना उन्हें पसन्द नहीं था। उन्होंने अपने माता-पिता के संस्कारों को आजीवन व्यवहार में लिया। उन्होंने अपना भविष्य बगैर किसी के सहारे बनाया। अपने ही पुरुषार्थ के बल पर ही उन्होंने अपने परिवार को संवारा व शासकीय सेवा के क्षेत्र में सेवानिवृत्ति तक गौरवशाली यश अर्जित किया। स्व. विष्णुजी ने अपने जीवन में शासकीय सेवा (जीवन बीमा निगम) के अलावा नागर ब्राह्मण समाज में अनेक कीर्तिमान स्थापित किये। **उन्होंने नागर प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति की स्थापना करके समाज के बच्चों के लिए जो प्रयास किया और विगत ढाई दशक से नये-नये आयामों के साथ प्रगति कर रही है। यह उनकी ऐसी यादगार है जो उन्हें सदैव अमर रखेगी।** श्री विष्णुप्रसादजी नागर, नागर परिषद् शाखा उज्जैन के अध्यक्ष रहे एवं समाज हित में अनेक कार्य किये। **हाटकेश्वर समाचार के सम्पादक का महत्वपूर्ण कार्य आपने संभाला एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इस मुख-पत्र की प्रगति के लिये प्रयासरत रहे** तथा आजीवन सम्पादक के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया। शिक्षा के क्षेत्र में आपका योगदान एक प्रकाश पुंज की भांति है। सन् 1978 में नागर प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति की उज्जैन में स्थापना की जो कि म.प्र. राज्य स्तर पर एक स्वतंत्र संस्था है। प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष इस संस्था द्वारा प्रतिभा सम्मान एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन किया जाता है। श्री हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण समाज सार्वजनिक न्यास बम्बाखाना, उज्जैन के न्यासी एवं हाटकेश्वर नागर ब्राह्मण मंदिर न्यास, हरसिद्धि द्वार उज्जैन के उपाध्यक्ष पद पर रहकर धर्मशाला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री विष्णुप्रसादजी नागर को उनकी दीर्घकालीन नागर ब्राह्मण समाज की सेवा एवं हाटकेश्वर समाचार के उत्कृष्ठ सम्पादक (तंत्री) के रुप में समग्र गुजरात नागर परिषद् द्वारा हीरक महोत्सव सभागृह विद्यापीठ गुजरात अहमदाबाद के परिषद् के अध्यक्ष श्री नरेश रामप्रसाद राजा के संयोजन में आयोजित भव्य समारोह में नागर-रत्न से सम्मानित किया गया। सरलता, सहजता, सौम्यता, सादगी, समता, सहिष्णुता, साहस, संवेदनशीलता, समर्पण आदि गुणों से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी श्री नागर का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण था। आप जहां भी जाते, आप से प्रभावित होकर वे भी समाजसेवा में आपके साथ जुड़ जाते। नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति केवल नागर ब्राह्मणों की होते हुए भी अन्य समाज के व्यक्तियों ने भी आपके परिश्रम और लगन को देखते हुए समिति को आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। आपकी कार्यप्रणाली में निष्ठा एवं पारदर्शिता होने के कारण आप सदा लोकप्रिय रहे। आप बीमारी की दशा में भी घंटों काम करते। स्वयं अपनी पीड़ा भूलकर दूसरों के दुःखों में सहयोग करने के लिये तत्पर रहते। आपके परिवार में स्नेह की सुगंध, व्यवहार की मधुरता एवं सम्बंधों का सामंजस्य दृष्टिगोचर होता है। आपकी पुत्रियों एवं दामादों ने अपनी सेवाभावना से यह सिद्ध कर दिया है कि वे पुत्रों से भी बढ़कर हैं।

-पवन शर्मा

कार्य और व्यवहार से अमर हो गए स्व. विष्णुप्रसादजी

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने कर्म एवं व्यवहार से अमर हो जाते हैं। नागर रत्न स्व. विष्णुप्रसाद नागर भी ऐसी ही शख्सियत है जिन्होंने अपनी राहें स्वयं बनाई एवं अंततः परिवार, समाज का ऋण चुकाने के बाद अमरत्व की मंजिल पर पहुंचे। उन्होंने शासकीय सेवा में समर्पण भाव से कार्य किया तथा समाज के प्रतिभाशाली छात्र छात्राओं के लिए प्रदेश स्तरीय प्रोत्साहन समिति का गठन किया। कर्म एवं सेवा के इस सफर में मुस्कुराहट सदैव उनके साथ रही। उनका कार्य और व्यवहार आज समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणास्पद है।

नागर इन्टर प्राईजेस

दलहन एवं तिलहन (अनाज) के क्रेता एवं विक्रेता

प्रोपा.
एल.एन. नागर
राजेश नागर,
सुरेन्द्र नागर

शादी एवं पार्टी के लिये मारुती वेन एवं अन्य वाहन उपलब्ध है

रेल्वे स्टेशन चौराहा, ए.बी. रोड, शाजापुर, (म.प्र.) फोन 228711 मो. 9424000477, 9425034721, 9893800501

महाकाल की धरा पर प्रतिभाओं का सम्मान 24 एवं 25 दिसम्बर को अनूठा आयोजन

उज्जैन। भगवान महाकाल की धरा पर प्रतिवर्षानुसार 24 एवं 25 दिसम्बर को म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति का 31 वां राज्य स्तरीय समारोह 24 एवं 25 दिसम्बर को उज्जैन में आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन की विशेषता है कि इसके निमंत्रण पत्र नहीं भेजे जाते, प्रदेशभर में प्रचारित इस आयोजन की दिनांक स्वयं समाजजन याद रखकर इसमें शिरकत करते है। समिति के सचिव श्री अशोक व्यास ने बताया कि 24 दिसम्बर को समिति के संस्थापक श्री विष्णु प्रसादजी नागर की स्मृति में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा जिसके प्रायोजक रहेंगे श्री सुभाष भट्ट (गांधीनगर) एवं उनके मित्रगण। दिनांक 25 दिसम्बर को पुरस्कार वितरण समारोह होगा। जिसके लिए उज्जैन नगर के नर्सरी से कक्षा 8 वीं, तक एवं सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के कक्षा 9 वीं से स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के प्रथम श्रेणी के उत्तीर्ण एवं चिकित्सा तकनीकी, कृषि आदि का प्रवेश परीक्षा में सफल छात्रों से प्रविष्टियां मंगवाई गई है। समिति ने वर्ष 2007 तक पांच बार पुरस्कृत छात्रों से 'आशा-विष्णु स्वर्णपदक' हेतु वर्षवार पुरस्कार की जानकारी सहित आवेदन आमंत्रित कर लिए हैं।

क्रांति-दूत

मैं क्रांति-दूत जग में क्रांति कराने आया हूं,
वसुधैव कुटुम्बकम् का नारा, संदेश शांति का लाया हूं।
आपस के झगड़ों में क्या भाई-भाई ही मरते नहीं
धरम के ठेकेदारों सुन लो, यह याद कराने आया हूं।
मानव कोई न चलना चाहे, आग उगलती है ये राहे,
चला क्रास पर ईसा क्यों, यह याद दिलाने आया हूं।
जब-जब अज्ञानता ने डाला डेरा, तब-तब यहां हुआ है सवेरा,
सब राज-पाट छोड़ा था क्यों, उस गौतम की कहानी लाया हूं।
क्यों हर मन में छाई निराशा, क्यों मानव-मानव खून का प्यासा,
छलनी हो रही सज्जनता क्यों, भीष्म प्रतिज्ञा कराने आया हूं।

-शिव मेहता 'शिव', मक्सी

रतलाम। दिनांक 25 नवम्बर 08 को चि. पियुष (सुपुत्र श्री रमाकांतजी पंडित-सौ. विपुला पंडित कालमुखी, खंडवा) एवं सौ.कां. प्रज्ञा त्रिवेदी (सुपुत्री-श्री ओमप्रकाश त्रिवेदी-सौ. प्रमिला त्रिवेदी, रतलाम) परिणय बंधन में बंधे। चित्र उसी अवसर का।

नोट- इसी प्रकार आप भी विवाह समारोह के फोटो उपरोक्तानुसार विवरण के साथ भेज सकते हैं। जिन्हें सहर्ष निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा।

उज्जैन नागर ब्राह्मण समाज फोन निर्देशिका

समस्त नागर ब्राह्मण परिवारों को जोड़ने के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों की फोन निर्देशिका का प्रकाशन शुरु किया गया है। वर्तमान में देवास शहर-ग्रामीण एवं राऊ-महू के नागर परिवारों की निर्देशिका प्रकाशित की गई है। आगामी माह उज्जैन शहर के परिवारों की निर्देशिका का प्रकाशन प्रस्तावित है। 2006 में स्थानीय युवा परिषद् द्वारा प्रकाशित निर्देशिका के बार बहुत सारे नंबर बदल गए हैं। जिनका सुधार जारी है। एकदम सही-सही जानकारी प्रकाशित करने के चक्कर में यह निर्देशिका विलंबित हो रही है। उज्जैन के सभी परिवारों से अनुरोध है कि वे देश के कौने-कौने में पहुंचने वाली उनकी जानकारी को सुधार करवा लेवें। निर्देशिका में नाम, पता, फोन, मोबाईल नं.के साथ ही कार्यक्षेत्र भी सम्मिलित किया गया है। जिसका उद्देश्य है कि समय पड़ने पर हम नागर बंधु आपस में सहयोग का आदान प्रदान कर सकें। 24 एवं 25 दिसम्बर को उज्जैन में आयोजित दो बड़े आयोजनों जीवनसाथी परिचय सम्मेलन एवं प्रादेशिक पुरस्कार वितरण समारोह में हमारे प्रतिनिधि उपलब्ध रहेंगे उनसे सम्पर्क कर कृपया सूचि में सुधार करवा लेवें।

-सम्पादक

पं. सतीश नागर

महर्षि सांदीपनी वेद विद्या प्रतिष्ठान से कर्मकाण्ड एवं वेद अध्ययन की डिग्री प्राप्त

गृह शांति, कालसर्प शांति, गृह शान्ति (वास्तु पूजन) विवाह कार्य, जप, यज्ञोपवित संस्कार, दुर्गा पाठ, पितृ शांति, सर्वदेव यज्ञ, प्राण प्रतिष्ठा एवं समस्त धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रोक्त, वैदिक पद्धति से सम्पन्न कराये जाते है।

74, बोहरा बाखल, खाराकुआ, उज्जैन (म.प्र.) फोन 0734-2552627, मो. 9827291390, 9826988983

मन्छाव्रत पर शिवालयों में घंटा और घड़ियाल गुंज उठे

बांसवाड़ा। 2 नवम्बर को कार्तिक शुक्ल की चतुर्थी पर बांसवाड़ा में मनछाव्रत के उद्यापन का विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ इसका आरम्भ सुबह हाटकेश्वर मंदिर में पूजन और आरती से आरम्भ हुआ इसके पश्चात नीलकंठेश्वर मंदिर में श्री पूजन और आरती का आयोजन हुआ दोनों स्थलों पर आरती के समय बड़े त्यौहार की तरह तैयार होकर पूरा नागर समाज एकत्रित होता है यह व्रत श्रावण शुक्ल चतुर्थी में स्नान के पश्चात संकल्प लिया जाता है किसी भी शिवमंदिर में पूजा करके उपवास आरम्भ किया जाता है और कार्तिक शुक्ल चतुर्थी तक चार माह में जितने भी सोमवार आते है शिव पूजन के साथ उपवास दोहराया जाता है कथा का वाचन किया जाता है।

कार्तिक शुक्ल चतुर्थीव्रत के उद्यापन का दिन होता है। सभी व्रतधारियों द्वारा पुजा कर लेने के बाद ही शंकरजी का श्रृंगार होता है और आरती आरम्भ होती है उस रोज 4 किलो गेहूं की आटा, एक किलो घी, एक, किलो गुड़ के साथ दाल, चावल और सब्जी के नैवेद्य का भोग लगाया जाता है इस सामग्री को कम या ज्यादा करने और घर में बासी रखने पर पूर्ण प्रतिबद्ध है इसलिए सामग्री के हिसाब से लोगों को प्रसादी हेतु आमंत्रित किया जाता है अथवा घर-घर में वितरित किया जाता है। इस व्रत को चार वर्ष तक मन इच्छा प्राप्त करने के लिए किया जाता है यह 16 सोमवार की तरह ही नियत समय पर होने वाला व्रत है।

हाटकेश्वर और नीलकंठेश्वर मंदिर में आरती के पश्चात सभी संकल्पधारी अपने अपने ग्रुप में किसी भी शिवालय में नेवैद्य का आयोजन करते है और अपने संबधियों, मित्रों को निमंत्रण देते है इस वर्ष यह आयोजन अंबिकेश्वर, हाटकेश्वर, गुरुमहाराज मंदिर, ऋषिकुंज, भेरवानन्दजी की छोटी छत्री पर इसका आयोजन हुआ। बांसवाड़ा से बाहर रहने वालों ने भी इन्दौर में दीन दयाल दवे मुम्बई में हेमन्त त्रिवेदी के निवास पर ही नहीं अहमदाबाद और सुदुर आस्ट्रेलिया में भी इसका आयोजन हुआ। कई श्रद्धालुओं ने बांसवाड़ा जाकर ही इसका उद्यापन किया यह व्रत बांसवाड़ा, डुगरपुर में सभी जातियों द्वारा भी किया जाने लगा है इसी को ध्यान में रखकर स्थानीय कलेक्टरों द्वारा इस रोज स्थानीय अवकाश घोषित किया जाता है।

प्रमोदराय झा इन्दौर फोन 0731-2415602

आत्मीयता भेजी सूर्य ने

आत्मीयता भेजी सूर्य ने
अपनत्व भेजा चन्द्र ने
निर्मलता भेजी जल ने
सहृदयता भेजी पवन ने
समग्रता भेजी धरा ने
सूर्योदय द्वार आपके
परोसता मधुर किरणें
नव दिवस शुभ सफल
सम्पन्न साकार रहे
शुभ-शुभ-शुभकामना

मुकुल व्ही मंडलोई
फोन 2484370

बांसवाड़ा के साहित्यकार

श्री नीलेश नागर

शिक्षा - हायर सैकण्डरी
पिता का नाम - श्री प्रीतमलाल नागर
जन्म स्थान - अहमदाबाद।
जन्म दिनांक- 9 अप्रेल 1966
जिले में निवास का दिनांक - जन्म के बाद से।
साहित्यिक उपलब्धियां
प्रकाशन - माँ सरस्वती साहित्य परिषद्, विधुजा सृजन परिषद् व अन्य के साहित्यिक प्रकाशनों में रचनायें।
प्रसारण - आकाशवाणी बांसवाड़ा से।
व्यक्तित्व व कृतित्व - अध्ययन में रूचि।
संप्रति - टाईपिंग व्यवसाय, न्यायालय परिसर, बांसवाड़ा में।
वर्तमान पत्र व्यवहार का पता- नागरवाड़ा दरवाजे के भीतर, बाबादेरी मंदिर के सामने, बांसवाड़ा (राज.)
मोबाईल - 9413194651

मेहता कम्यूनिकेशन
बी.एस.एन.एल. द्वारा अधिकृत
सिम प्रीपेड, पोस्टपेड प्लान परिवर्तन
आईडिया, एयरटेल, स्मार्ट, टाटा, रिम एवं
बी.एस.एन.एल. सुविधा उपलब्ध
समस्त कंपनियों के रिचार्ज वाउचर उपलब्ध है
लैंडलाइन कनेक्शन ब्राडबैंड कनेक्शन

श्री किसान कृषि सेवा केन्द्र
कृषि दवाइयां, बीज एवं कृषि उपकरण के विश्वसनीय विक्रेता
21-ए, क्षीरसागर शापिंग कॉम्पलेक्स, उज्जैन
फोन 0734-2563035, मो. 9425094581,
9425380483, 9425917018

साँईबाबा की काका साहेब पर विशेष कृपा रही

गतांक से आगे

दीक्षित की बाबा से मिलने की इच्छा का पता लगते ही मिरीकर ने माधव राव देशपांडे (शामा) को खबर भेज दी। शामा बाबा के परम भक्त थे। वे किसी कार्य से अहमदाबाद आ रहे थे। मिरीकर ने शामा को दीक्षित जी को शिरडी ले जाने का कार्य सौंप दिया। सन् 1909 में पहली बार शामा दीक्षित को शिरडी लाए। पहली ही भेंट में दीक्षित बाबा को देख बहुत प्रभावित हुए व बाबा पर उन्हें विश्वास होने लगा, क्योंकि बचपन से दीक्षित के मन में किसी साधु या संत के साथ रहने की इच्छा थी। अब वे बार-बार बाबा के दर्शन के लिए शिरडी आने-जाने लगे। सन् 1910 में उन्होंने शिरडी में एक भवन का निर्माण करने का भी फैसला किया। दिसम्बर 1910 में काका वाड़ा (इसे दीक्षित वाड़ा भी कहते हैं) का शिलान्यास किया गया। बाबा की कृपा से पांच महीनों में (अप्रैल 1911) में भवन का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया। शुरु से ही काका की इच्छा थी कि वे एकान्त ध्यान व पूजा पाठ के लिए पहली मंजिल पर अपने लिए एक छोटा सा कमरा बनवाएंगे। भवन के बाकी सभी कमरे तीर्थ यात्रियों के उपयोग के काम में आते थे। शुरु से ही बाबा की काका (दीक्षित) पर बहुत कृपा रही। एक बार बाबा ने अन्ना साहेब दाभोलकर से कहा, '' काका साहब एक अच्छे व्यक्ति हैं। जैसा वे कहे, उनका हमेशा कहना मानना।'' आर.बी. पुरंदरे को तो बाबा ने दीक्षित के साथ रहकर इन सब कार्यों में हाथ बंटाने के लिए भी कहा था। हालांकि शुरु में दीक्षित बाबा के पास केवल टांग के लंगड़ेपन के इलाज के लिए ही गए थे। परन्तु अब उन जैसे गंभीर व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य तो केवल आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना था। दीक्षित ने कहा भी था, ''शरीर का लंगड़ापन ज्यादा महत्व नहीं रखता।'' वे चाहते थे कि बाबा उनकी आत्मा के लंगड़ेपन का इलाज करें। बाबा व अन्य भक्त दीक्षित को काका (यानि चाचा) कह कर पुकारते थे। काका के विचारों को बाबा जान चुके थे। इसलिए बाबा ने कहा था, '' मैं अपने काका को विमान में ले जाऊंगा।'' (यानि इन्हें जीवन-मृत्यु के बंधन से मुक्त कर दूंगा- अर्थात् सद्गति प्रदान करुंगा।)

बाबा ने किस प्रकार अपने वचनों का पालन किया, यह नीचे दी गई घटनाओं को पढ़ कर स्पष्ट होता है। सन् 1909 में दीक्षित 45 वर्ष के थे। अपने गुणों और कार्यक्षमता के कारण वे सामाजिक, राजनैतिक तथा कानूनी क्षेत्र में छाए हुए थे। वे चाहते तो कम समय में ही उच्च पद एवम् काफी धन कमा सकते थे लेकिन बाबा की कृपा और पूर्वजन्म के ऋणानुबंध के कारण धन-संपत्ति व सांसारिक विषय-वासनाओं से उनका मोह छूट चुका था। दयालु स्वभाव के कारण उन्होंने अपने धन का उपयोग दीन-दुखियों की सेवा में किया। फलस्वरुप संपत्ति के रुप में अब उनके पास केवल मुंबई, लोनावाला तथा विर्ले के तीन बंगले ही बचे, जिनसे उन्हें कोई लाभ नहीं हो पाता था। बाबा के सशक्त आकर्षण के कारण वे जल्दी -जल्दी शिरडी आने लगे, जिसका असर उनके वकालत के पेशे पर पड़ा। धंधे में नुकसान होने के कारण उनके साझीदार राव बहादुर एस.नर्पणदास और धानजी शाह ने उनका साथ छोड़ दिया। दीक्षित ने वकील पुरुषोत्तम राय मार्कंड के साथ साझेदारी में एक और फर्म खोली। लेकिन दीक्षित के अक्सर शिरडी जाने तथा काम में मन न लगाने के कारण मार्कंड ने भी उनका साथ छोड़ दिया। एक अन्य वकील मित्र माणिक लाल ने भी इन्हीं कारणों से तंग आकर उनका साथ छोड़ दिया। अब वकालत से होने वाली आमदनी बहुत ही कम हो गई। सन् 1911 में तो उनका वकालत का काम एकदम ठप्प ही हो गया। समय-समय पर बाबा दीक्षित को मुंबई जाकर वकालत करने की सलाह देते। बाबा की आज्ञा का पालन कर दीक्षित मुंबई चले तो जाते लेकिन उनके दिल में शिरडी का ही ध्यान रहता। इसीलिए वे जल्दी ही शिरडी लौट आते। सन् 1912 में जब उन्होंने वकालत से अपना नाता हमेशा के लिए तोड़ डाला तो उनके कई मित्रों, जानने वालों और प्रशंसकों को ऐसा कहते भी सुना गया कि, ''शिरडी के एक फकीर सांई बाबा ने इन पर न जाने क्या जादू कर दिया है कि ये हमेशा शिरडी जाने के लिए पागल रहते हैं।'' शेष अगले अंक में।

प्रस्तुति श्रीमती शारदा मंडलोई

सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ

दवे परिवार

इन्दौर (म.प्र.)

अहमदाबाद में जीवन साथी पसंदगी सम्मेलन १८ जनवरी ०९ को

अहमदाबाद। समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल) के तत्वावधान में 18 जनवरी 09 रविवार को प्रातः 10 बजे मणीनगर व्यायामशाला एल.जी. अस्पताल के सामने अहमदाबाद में आयोजित है। इच्छुक युवक-युवती के आवेदन 10 जनवरी 09 तक आमंत्रित किए गए हैं। पत्र व्यवहार एवं सम्पर्क श्री नरेश राजा (अध्यक्ष) 458, जेठाभाईनी पोल, खाडिया पोस्ट आफिस के सामने, खाडिया अहमदाबाद फोन 079-22140688, (ऑ) 25453368 (फेक्स) 25461455 से करें। आवेदन के साथ 200/- रु. भेजे जावें। अतिरिक्त मेहमान के लिए 60 रु. शुल्क है। विवरण निम्नानुसार देवें।

ना जय हाटकेश

।। श्री गणेशाय नमः।। श्री हाटकेश्वराम्बिकाभ्यो नमः।।

उमेदवारनी विगतो

ताजेतरनो पासपोर्ट साईझनो ज कलर फोटो अहीं लगाववो फरजियात छे

1. _____
   अटक नाम पितानु नाम
2. सरनामुं : _____

_____

फोन नं. _____ (ऑ) _____ मोबाइल _____

3. जन्म तारीख _____ जन्म स्थल _____ जन्म समय _____ मुल वेतन _____
4. पेटाज्ञाति- विसनगरा/वडनगरा/साठोदरा/प्रश्नोरा/चित्रोडा
5. वजन _____ किलोग्राम, 6. उंचाई _____ फुट/से.मी.
7. शैक्षणिक लायकात _____, 8. व्यवसाय _____
9. मासिक आवक रु. _____ 10. गोत्र _____ 11. नाडी _____
12. जन्माक्षरमां मानो छो? हा/ना 13. मंगल छे?हा/ना 14. शनि छे? हा/ना
15. विशेष नोंध- (1) अपरणित _____ (2) विधुर/विधवा _____

(3) छुटाछेड़ा लीधा होय तो तेनी विगतो _____

(4) खोडखांपण _____

जीवनसाथी पसंदगी के बारे में आपके विचार _____

अमो आवेदनपत्रमां भरेली तमाम विगतों साची अने दोष रहीत छे. माहिती अंगेनी कोईपण विसंगता माटे अमो नीचे सही करनार संपूर्ण जवाबदार रहीशुं।

उमेदवारना रु. 200/- + वालीना रु. = + अंके रुपिया

रोकड़ा/चेक/ ड्राफ्ट नं. ..... ता. ..... द्वारा मोकलीए छीए। जे स्वीकारी आभारी करशोजी।

भारत भरमे भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में आप आपको भरने की कुल राशी में रु 25/- अतिरिक्त (बैंक सर्विस चार्ज के साथ) A/C. No. 10415264607 यह अकाउन्ट में राशी जमा कर के रीसीप्ट की झेरोक्ष कोपी फोर्म के साथ भेजें।

तारीख _____ वालीनी सही _____ उमेदवारनी सही _____

मैं भविष्य विचारों के महलों में आनन्द मानता हूं,
क्योंकि इससे मुझे आराम मिलता है।

भविष्यवक्ता वैद्य पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी (शास्त्री)

उज्जैन। किसी कवि ने कहा है कि तरुणों के लिये उनका भविष्य उज्जवल होता है, यदि उन्हें वर्तमान में समुचित मार्गदर्शन एवं परामर्श मिल सके। ऐसे ही प्रसिद्ध शिक्षाविद्, ज्योतिर्विद एवं वैद्य अपने आध्यात्मिक एवं ज्योतिष के ज्ञान से मार्गदर्शन देने वाले भविष्यवक्ता है वैद्य पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी (शास्त्री)। स्व. पं. श्री दुर्गाशंकरजी त्रिवेदी जागीरदार सा. भुतेश्वर के तृतीय पुत्र श्री त्रिवेदी की बचपन से ही कर्मकांड, संस्कृत, आयुर्वेद, एवं ज्योतिष में गहन रुचि रही। प्रसिद्ध वैद्य पं. शंकररावजी पलशीकर के सानिध्य में रहकर दस वर्षों तक उपरोक्त विषयों का अध्ययन कर परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की। वर्तमान में आप 37 वर्ष की शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त होकर इन विषयों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग जनहित में कर रहे हैं।पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी एक सफल ज्योतिषी के साथ ही प्रसिद्ध शिक्षाविद् भी है। एमएससी के साथ बी.एड.एम.एड की उपाधि विक्रम वि.वि. से प्राप्त की है। पं. त्रिवेदी ने ज्योतिष में विभिन्न विषयों में देश एवं प्रदेश में अनेक व्याख्यान लेख व भाषण प्रस्तुत किए है आपने अनेक भविष्य वाणियां की है जो शत प्रतिशत सही साबित हुई है जैसे इंदिरा गांधी का पुनः प्रधानमंत्री बनना, डॉ. शंकरदयाल शर्मा का राष्ट्रपति बनना, श्री नरसिंहराव की पूर्ण अवधि तक प्रधानमंत्री पद पर बने रहना। अटल बिहारी वाजपेयी का प्रधानमंत्री बनना तथा साढ़े चार साल में पुनः चुनाव होना। श्रीमती सोनिया गांधी, श्री अर्जुनसिंह एवं श्री केसरी का कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बन सकता इत्यादि भविष्यवाणियां सही रही। श्री त्रिवेदी अपनी सरकारी नौकरी पूर्णतः इमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा से करते हुए सन् 2006 में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) उज्जैन से सेवानिवृत्त हुए। आपके श्रेष्ठ शिक्षकीय कार्य के कारण आपको 5 सितम्बर 08 को शिक्षक दिवस पर पूर्व मंत्री बाबूलाल जैन द्वारा प्रतिक चिन्ह, शाल, श्रीफल से सम्मानित किया। पंडीतजी की विद्वत्ता से प्रभावित होकर जिला प्रशासन ने सिंहस्थ 2004 हेतु विभिन्न समितियां में मनोनीत किया। नासिक कुंभ में तो पूर्व मुख्यमंत्री श्री दिग्विजयसिंह ने स्वयं संत महात्माओं को आमंत्रित किया जिसमें पं. त्रिवेदी ने ही आमंत्रण का कार्य स्वस्तिवाचन द्वारा सम्पन्न कराया। ज्योतिष-संस्कृत के साथ-साथ आप आयुर्वेद के भी विद्वान हैं आपने भिषंगाचार्य एवं आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त करके प्रसिद्ध वैद्य श्री गुलजारी लालजी के सानिध्य में 10 वर्षों तक औषधालय में कार्य किया। इतनी सारी विशेषताओं के धनी पं. त्रिवेदी नागर ब्राह्मण समाज के गौरव हैं एवं नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी आप विद्यादान कर रहे हैं तथा वर्तमान में राष्ट्रभारती शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन में प्राचार्य पद पर कार्यरत है। वे ज्योतिष, आयुर्वेद सम्बंधि समस्याओं के समाधान हेतु उनके निवास स्थान 3 ब्राह्मणगली, बहादूरगंज उज्जैन पर उपलब्ध है।

समय प्रातः 8 से 11 एवं सायं 7 से 11
फोन नं. 0734-2559713, मो. 9827306471, 9893205524

नागर समाज के गौरव डॉ. गोपाल कृष्ण नागर

उज्जैन। कल्पवृक्ष कार्यालय नई सड़क उज्जैन लगभग 100 वर्षों से जन-जन की सेवा में संलग्न है। डॉ. गोपाल कृष्ण नागर उसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। संत श्री स्व. दुर्गाशंकरजी नागर इनके दादाजी थे, जो कि कल्पवृक्ष कार्यालय के जनक (संस्थापक) थे। जन-जन में उनकी मनोचिकित्सा से लोग लाभान्वित होते थे। विभिन्न पद्धतियों से व प्रार्थना द्वारा रोगों का निदान उनकी विशेषता थी। डॉ. नागर के पिता डॉ. बालकृष्णजी नागर ने चिकित्सा कार्य करते हुए कल्पवृक्ष कार्यालय की कृतियों को प्रकाशित एवं प्रसारित किया।

डॉ. गोपालकृष्ण नागर (पेथालाजिस्ट) गुजरात में चिकित्सा करने के अलावा तीन वर्ष तक ईरान में चिकित्सा से जुड़े रहे। पश्चात कल्पवृक्ष कार्यालय में नागर पेथालाजी सफलता पूर्वक संचालित कर रहे है। आप इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन (आय.एम.ए.) म.प्र. के अध्यक्ष हैं। ब्लड डोनेशन ग्रुप के भी अध्यक्ष है। लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री रह चुके है। आर.डी. मेडिकल कालेज के प्रोफेसर भी है। हाटकेश्वर देवालय न्यास के अध्यक्ष के रुप में उर्दूपुरा धर्मशाला में लाखों रुपयों का निर्माण करवाकर उसे नया रुप दिया है। इनकी सरलता, शान्त एवं सौम्य प्रकृति से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता समाज की प्रत्येक गतिविधि में सक्रियता से भाग लेना व उन्हें प्रोत्साहित करना इनकी विशेषता है, प्रभु इनको सम्बल प्रदान करे।

प्रस्तुती- रामचन्द्र जोशी एवं कृष्णगोपाल व्यास

श्री नटवरलालजी झा : कर्मप्रधान लक्ष्य सफलता का राज

बांसवाड़ा। राष्ट्रीयकृत बैंक सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के प्रधान कार्यालय कलकत्ता से सहायक महाप्रबंधक (AGM) जैसे उच्चपद से सेवा निवृत्त होकर भी मामाजी श्री नटवरलालजी झा अपनी सादगी, पारिवारिक सम्बंधों की महत्ता और समाजसेवा की भावना को कभी विस्मृत नहीं किया। बांसवाड़ा में 6 मार्च 1936 को जन्में मामाजी 16 वर्ष की आयु में ही 1952 में कलकत्ता में अपनी बहन पार्वती और हम नाम बहनोई श्री नटवरलालजी दवे (जिन्हें कलकत्ता में गुरुजी और महादेव के नाम से ही जाना जाता था) की प्रेरणा से सेन्ट्रल बैंक में नौकरी करने चले आये थे। वहां रहकर एम काम, एल एल बी का अध्ययन किया बैंकों में तरक्की के लिए होने वाली परीक्षा सी.ए.आर.आई.बी. के दोनों भाग उत्तीर्ण किये उनकी काम में लगन, मेहनत और कुशाग्रता को ध्यान में रखकर बैंक ने उनका स्थानान्तरण, लंदन शाखा में किया वहां सेवा में रहते हुए वारकले बैंक में कार्य करते हुए प्रशिक्षण भी लिया। समय का सदुपयोग उनकी विशेषता थी लंदन से होने वाली बैंकिंग की परीक्षा ए.सी.आई.बी. प्रथम प्रयास में ही विशेष योग्यता के साथ पासकर डिग्री हासिल की और अपने लंदन प्रवास को सफल बनाया। भारत में वापस आकर आयात निर्यात और विदेश विभाग की चुनौतियों को भीसफलतापूर्वक पार किया इन्टरनल ओडिटर का कार्य भी बखुबी निभाया मध्यप्रदेश की छिंदवाड़ा और गुजरात की आणंद और अन्य स्थानों पर रीजनल मैनेजर का पदभार संभाला और सभी को चमत्कृत करते हुए सहायक महा प्रबन्धक की ऊंचाइयां हासिल की। परन्तु मन में कभी अहम का भाव नहीं आया अपनी योग्यता और परिश्रम से प्राप्त नौकरी और इन ऊंचाइयों को पिता श्री लाभशंकर जी और कुननबा बहन-बहनोई महादेव पार्वती की प्रेरणा और आशीर्वाद ही कहा करते थे और इसी भावना से पुत्रवत रहकर मेरी मातुश्री की देखभाल की। मुझे भी उनके स्नेह के अवसर हमेशा स्मरण हो जाते है मेरे रायपुर और सागर में निवास के समय अपने सहयोगी कर्मचारियों और मित्रों से हमारी कुशलक्षेम पुछवाते रहते थे इससे हमारा पहचान का दायरा भी बढ़ता था और अकेलापन भी दूर होता था।

सेवा निवृत्ति के पश्चात बांसवाड़ा आगमन पर श्री राजेन्द्र त्रिवेदी और अन्य बैंको से सेवानिवृत्त लोगों का सहयोग लेकर हाटकेश्वर बचत एवं साख समिति का गठन सन 2000 में किया। वहां चलने वाली छोटी-मोटी अनियमित B.C. इसमें समाहित हो गई इस समिति की सदस्य संख्या 275 के करीब है और तीस लाख के अग्रिम जमा के साथ कार्यरत है। इसमें 30 हजार प्रति व्यक्ति के हिसाब से लोन प्राप्त होता है पति पत्नी मिलकर 60 लोन की पात्रता रखते है। मामाजी इस समिति के अध्यक्ष है। सेन्ट्रल बैंक के नागर कर्मचारियों को प्रोत्साहित करके हाउसिंग सोसाइटी बनाई और वस्त्रापुर रेलवे स्टेशन (अहमदाबाद) के पास नये नागरवाड़ा की नींव रखी। इसके बाद भी बांसवाड़ा से अहमदाबाद जाने वाले इसी के आसपास सेटेलाइट क्षेत्र में बसे है जिससे एक दूसरों से निरन्तर सम्पर्क बना रहे। यही सम्पर्क अहमदाबाद में बांसवाड़ा की याद दिलाते रहते है। इनके बड़े सुपुत्र पीयुश झा सिनीयर सुप्रीटेन्डेन्ट सेन्ट्रल एक्साइज अहमदाबाद में है और छोटे सुपुत्र किरिट झा अमेरिका में कम्प्यूटर इंजीनियर फाइनेंस सेक्शन में है। वर्तमान में मामाजी दुर्लभरामजी के मंदिर पुनःनिर्माण में अपनी सेवाएं दे रहे हैं मुझे विश्वास है उनकी सक्रियता कभी व्यर्थ नहीं जायेगी।

प्रस्तुति- मंजु प्रमोदराय झा
सी-20, सुविधी नगर, इन्दौर
सम्पर्क पता- श्री नटवरलालजी झा
गुरु महाराज धर्मशाला के पास, नागरवाड़ा, बांसवाड़ा (राज.)

राजस्थान नागर (ब्राह्मण) परिषद का गठन

अकलेरा (राज.)। विगत 13 अक्टूबर 08 को गुरुपूर्णिमा पर्व के अवसर पर क्षेत्र के नागर समाज के प्रबुध्द नागरिकों की उपस्थिति में राजस्थान नागर (ब्राह्मण) परिषद का गठन किया जाकर डॉ. हरिप्रसाद नागर को संरक्षक एवं समाजसेवी श्री कुलेन्द्र नागर एड्व्होकेट को महासचिव पद पर सर्व सम्मति से मनोनीत किया गया। श्री कुलेन्द्र नागर ने बताया कि राजस्थान में समाज की गतिविधियां लगभग ठप पड़ी है। उपरोक्त परिषद नागर बहुल शहरों में समाज को एकजुट कर उन्हें गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास करेगी। समय-समय पर राजस्थान में निवासरत नागरजनों की सामाजिक गतिविधियों का लेखा-जोखा 'जय हाटकेश वाणी' के माध्यम से अन्य प्रांतों में बसे नागरजनों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा।

We Arrange:-

ECO TOUR CONSULTAN
Excellent Economic Excursion

TOURS	TICKTING	EVENTS
Corporate	Air (domestic & international)	Conferences
Honeymoon	Train (E-ticketing)	Parties
Individual	Bus booking	Shows
Religious	Taxi	Picnic
Educational	And all type of convinces	Cultural activities....

PLEASE CONTACT:- NAVIN NAGAR- 9893163021, SHWETA JHA-9300130848,
ECO TOUR CONSULTANT: 57-58, RNT MARG, CHAWNI CHOURAHA, INDORE

डॉ. शिवेशचन्द्रजी व्यास की स्मृति में आयोजित

श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ का समापन

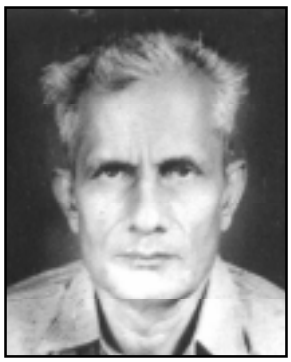

पीपलरांवा। क्षेत्र में धनवंतरी के नाम से विख्यात स्व. डॉ. श्री शिवेशचन्द्र व्यास की स्मृति में उनके कुए 'देवरावाला' पर उनकी धर्मपत्नि श्रीमती विद्यावती व्यास एवं परिवार द्वारा दि. 3 नवम्बर 08 से 10 नवम्बर 08 तक श्रीमद् भागवत ज्ञान-यज्ञ आयोजित किया गया। कथा एवं प्रवचनकार थे देश के ख्याती प्राप्त रामचरित मानसमर्मज्ञ एवं श्रीमद् भागवत कथाकार पं. श्री महेश मिश्र भोपाल। श्रीमद भागवत पारायणकर्ता रहे पं. श्री नरेन्द्र पांडे तथा सहयोगी रहे पं. श्री सतीश पाठक (भूतियाखुर्द)। प्रथम दिवस कर्मकांडीय पूजनोपरांत पं. श्री मिश्र सहित ब्राह्मणों को स्व. श्री व्यास के ज्येष्ठ पुत्र एड्व्होकेट प्रमोद व्यास, डॉ. श्री अशोक व्यास एवं प्राचार्य श्री अरुण व्यास सहित पूरे परिवार ने पुष्पार्चन कर स्वागत किया। सप्त दिवसीय श्रीमद भागवत कथा वाचन के पं. श्री मिश्र ने भागवत के साथ रामचरित्र मानस की विभिन्न कथाओं के माध्यम से जीवन में मार्मिक प्रसंगों की रहस्यात्मक व्याख्या की तथा अन्तरपट खोलने का प्रयास किया। समापन बेला के अवसर पर स्थानीय कवि श्री शिव राठोर एवं श्री ललित जोशी ने स्व. डॉ. श्री व्यास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर कविताएं प्रस्तुत की। श्रीमद् भागवत कथा की उक्त अवधि में प्रतिदिन कार्यक्रम का संचालन पत्रकार श्री हरिनारायण नागर ने किया। समापन दिवस 10 नवम्बर 08 को पत्रकार श्री नागर ने पं. श्री मिश्र, आयोजक व्यास परिवार एवं श्रोताओं के प्रति जबकि सुपुत्र प्राचार्य श्री अरुण व्यास ने इस आयोजन की प्रेरणा, व्यवस्था एवं संचालन के प्रति पत्रकार श्री नागर, श्री त्रिभुवनलाल मेहता, पं. श्री मिश्र सहित ब्राह्मणों एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। समापन अवसर पर स्थानीय समस्त नागर परिवार एवं स्नेही जन के सामूहिक भोज के साथ श्रीमद भागवत ज्ञान यज्ञ का समापन हुआ।

पीपलरांवा स्मारिका हेतु अंतिम निवेदन

पीपलरांवा। पीपलरावां से प्रकाशित होने वाली स्मारिका हेतु वांछित जानकारी कतिपय परिवारों से अप्राप्त है। हम चाहते है कि स्मारिका में पीपलरांवा के एक-एक परिवार का समावेश हो तभी उसकी पूर्णता सार्थक होगी। अत्यंत खेद के साथ निवेदन करने में आता है कि हमारे कतिपय बंधुओं की या तो इसमें रुचि नहीं है अथवा उन्हें किंचित मात्र भी फुरसत नहीं है। अतः इस सूचना के द्वारा यह अंतिम निवेदन है कि 31 दिसम्बर 08 तक यदि अवशेष परिवारों की माहिति (कम्प्यूटराईज्ड) प्राप्त नहीं हुई तो हम स्मारिका बनाने का कार्य शुरु कर देंगे। तथा स्मारिका में ऐसे परिवारों के नाम का केवल उल्लेख मात्र कर दिया जावेगा।

आशा एवं अपेक्षा है कि आप अपने परिवार की वांछित माहिती समयावधि में मेरे पते पर प्रस्तुत कर स्मारिका को पूर्णता प्रदान करने में अपना महती सहयोग प्रदान करेंगे।

-हरिनारायण नागर, अध्यक्ष

स्वदेश आगमन

माकड़ोन (जिला उज्जैन)। श्री मोहन शर्मा (सुपुत्र- डॉ. देवीलाल शर्मा) जो वर्तमान में डेवलपमेंट सपोर्ट सेंटर अहमदाबाद में सीनियर मैनेजर के पद पर कार्यरत है, दिनांक 10-10-08 को पन्द्रह दिन का अमेरिका प्रवास कर स्वदेश लौटे। श्री शर्मा ने अमरिका के प्रख्यात येल विश्वविद्यालय के प्रबंधन संस्थान द्वारा आयोजित इंटरनेशनल सोशल इंटरप्रोन्यरशिप प्रोग्राम में हिस्सा लेते हुए ''स्थायी विकास हेतु स्वावलंबी संस्थाएं'' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। अपने प्रवास के दौरान श्री शर्मा ने अमरिका में नॉन प्रॉफिट आर्गेनाइजेशन के जनक डॉ. हॉल से सौजन्य मुलाकात कर उन्हें भारत आने का निमंत्रण दिया। श्री शर्मा ने बी.टेक एवं एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त कर पिछले बारह वर्षों से जल प्रबंधन से सम्बंधित शोध व परियोजनाओं के विभिन्न कार्यों से जुड़े हैं।

7 आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ) 7

हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान

(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)

10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 4060184, मो. 9425963751

प्राथमिक विद्यालय से विश्वविद्यालय तक का सफर

व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी अर्थशास्त्री प्रोफेसर डॉ. रामरतन शर्मा

जन्म- उज्जैन जिले के तराना परगने के ग्राम डेलची (माकड़ोन) में एक किसान एवं विसनगरा नागर ब्राह्मण परिवार में पंडित गौरजी महाराज स्व. बापूलालजी शर्मा (नागर) के यहां माता श्रीमती बरजूबाई की कोख से 01-04-1938 को गायत्री उपासक समाजसेवी अर्थशास्त्री डॉ. रामरतन शर्मा का जन्म हुआ।

सन् 1958 में आपका विवाह राऊ (इन्दौर) निवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. नन्दलालजी व्यास की सुपुत्री सौ.सुमित्रा से ग्राम रुपाखेड़ी (देवास) निवासी पटेल स्व. हरिनारायण नागर मामाजी के यहां हुआ। आपके परिवार में एक पुत्र व पांच पुत्रियां हैं। पुत्र मुकेश मैकेनिकल इंजीनियर हैं तथा सौ. किरण श्री हेमन्त शर्मा, सौ मंजू श्री संजय व्यास, सौ. सीमा श्री राजीव मण्डलोई, सौ. अन्नू श्री शैलेष व्यास एवं सौ. सपना श्री ऐश्वर्य मेहता पुत्रियां विवाहित हैं। वस्तुतः डॉ. शर्मा पौत्र एवं नातियों के साथ जीवन का आनन्द उठा रहे हैं।

शिक्षा- डॉ. शर्मा की प्राथमिक शिक्षा अपने गांव डेलची में तथा माध्यमिक शिक्षा निकटवर्ती कस्बे माकड़ोन में हुई। सन् 1955 में माध्यमिक 8 वीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आप कक्षा 8 पास करने के पश्चात अपना अध्ययन पारिवारिक गरीबी के कारण निरन्तर नहीं रख सके। आपके प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के गुरु स्व. मिश्रीलालजी दुबे, श्रीरामचन्द्रजी शर्मा एवं डॉ. श्यामसुन्दरजी निगम थे।

शिक्षा विभाग में सेवा- डॉ. शर्मा 8 वीं कक्षा उत्तीर्ण कर 28-09-1955 को अपने ग्राम डेलची की प्राथमिक शाला में सहायक शिक्षक के रुप में शासकीय सेवा में आ गये। प्राथमिक शाला में सहायक शिक्षक रहते हुए आपके मन में यह सुनिश्चित हुआ कि वे आगे पढ़-लिखकर कालेज एवं विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनेंगे। वस्तुतः यह सपना आपका साकार हुआ इस सपने को साकार करने में आपके काकाजी श्री पूर्णचन्द्रजी शर्मा जो शिक्षा विभाग में सहायक जिला शिक्षा अधिकारी थे ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने आपको 1957 में उज्जैन रंगमहल स्कूल नई पेठ में महिदपुर से उज्जैन ट्रांसफर करवा कर बुलाया और यहां से डॉ. शर्मा का केरियर स्टार्ट हुआ। प्राथमिक शाला में रहते हुए आपका ट्रांसफर डेलची से मड़ावदा (खाचरौद), पंथपिपलाई, महिदपुर शाला क्र. 2 तथा यहां से रंगमहल उज्जैन, नईपेठ माध्यमिक विद्यालय, कैलाश भवन माध्यमिक विद्यालय, उज्जैन इस प्रकार कई स्कूलों में रहे।

योग्यता विस्तार- शिक्षा विभाग में सहायक शिक्षक के पद पर सेवाकार्य करते हुए आपने स्वाध्यायी छात्र के रुप में 1959 में मैट्रिक परीक्षा महिदपुर से उत्तीर्ण की। सन् 1961 में इण्टरमीडिएट पास किया। सन् 1963 में माधव महाविद्यालय उज्जैन में शासकीय सेवा में रहते हुए नियमित छात्र के रुप में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1966 में माधव कालेज में नियमित छात्र के रुप में एम.ए. अर्थशास्त्र की परीक्षा प्रथम श्रेणी 86 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्राविण्य सूची में तृतीय स्थान पाकर उत्तीर्ण की।

माधव महाविद्यालय में प्राध्यापक- आपने लगभग 12-13 वर्ष तक शिक्षा विभाग में सहायक शिक्षक के पद पर 30-1-40 की ग्रेड में याने 51 रुपये से 110 रुपये तक वेतन पर रहकर शासकीय सेवाकार्य करते हुए 14-10-1966 को शिक्षा विभाग से इस्तीफा देकर तत्कालीन माधव कालेज के प्राचार्य स्व. डॉ. शिवमंगलसिंहजी सुमन की अनुशंसा एवं गुरुवर डॉ. विष्णुदत्तजी नागर एवं वाणिज्य शास्त्री डॉ. मदन व्यास के आशीर्वाद से 15-10-1966 को आपने विक्रमविश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ. नंददुलारे वाजपेयी की अनुकंपा से माधव महाविद्यालय, उज्जैन में सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र के पद पर कार्यभार संभाला। इसके पूर्व आप 6-6-1966 से 14-10-1966 तक सांदीपनि महाविद्यालय, उज्जैन में भी अस्थायी रुप से निःशुल्क अपनी सेवा देते रहे। आपने 1965 में प्रयाग से होने वाली साहित्य रत्न की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। सन् 1972 में आपने विख्यात अर्थशास्त्री डॉ. विष्णुदत्तजी नागर इन्दौर के कुशल निर्देशन में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर से 'शिक्षा का अर्थशास्त्र' मध्यप्रदेश के शैक्षणिक विकास के विशेष सन्दर्भ में विषय पर डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी (पीएच-डी) की उपाधि प्राप्त की। प्राथमिक शाला से विक्रम विश्वविद्यालय में उपाचार्य/आचार्य-डॉ. शर्मा की तीव्र आकांक्षा थी कि वे कालेज की नौकरी के बजाय विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा संचालित अर्थशास्त्र अध्ययनशाला में अध्यापन करें। उनकी यह आकांक्षा भी पूर्ण हुई और वे वहां उपाचार्य/आचार्य के पद पर आसीन हुए। डॉ. शर्मा 1988 से 1998 तक विक्रम विश्वविद्यालय में रहे जहां से आपकी प्रतिभा न केवल मध्यप्रदेश में अपितु सारे भारतवर्ष में एक विख्यात अर्थशास्त्री एवं लेखक के रुप में फैल गई। विक्रम विश्वविद्यालय की सेवा में आने के पूर्व डॉ. शर्मा की पदोन्नति आचार्य अर्थशास्त्र के पद पर माधव कालेज में की गई। माधव कालेज में आपने 15-10-66 से 11-10-87 तक 21 वर्ष तक अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष पद पर कार्य किया।

पुस्तक लेखन व प्रोजेक्ट कार्य- डॉ. शर्मा 1972 में पीएच-डी. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात डॉ. जी.पी. गुप्ता की प्रेरणा से पाठ्यपुस्तक लिखने की ओर अग्रसर हुए। वस्तुतः सन् 1974 में आपने 'नियोजन के सिद्धान्त एवं भारत में नियोजन' शीर्षक से प्रथम पुस्तक बी.काम. कक्षा के लिए लिखी जिसका प्रकाशन भैय्या प्रकाशन इन्दौर ने किया। इसके बाद भैय्या प्रकाशन इन्दौर ने आपकी बी.ए. भाग 1-2 एवं 3 की

डॉ. रामरतन शर्मा को डॉ. शंकर दयाल शर्मा सृजन सम्मान

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा वर्ष 2006 के लिए अर्थशास्त्र विषय में प्रदान किये जाने वाले डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान डॉ. रामरतन शर्मा को प्रदान किया जा रहा है। इस गौरवशाली सृजन सम्मान में अकादमी द्वारा इक्कीस हजार रुपए की सम्मान राशि समारोह पूर्वक सादर प्रदान की जाती है। सामयिक सम्मान की मांग को देखते हुए जय हाटकेश वाणी डॉ. शर्मा का विस्तृत जीवन परिचय प्रस्तुत कर रही है। स्थानाभाव के कारण इसे दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है। सम्पूर्ण विवरण के लिए जनवरी 09 का अंक देखना न भूलें।

पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की। ये पुस्तक इतनी लोकप्रिय हो गई कि मध्यप्रदेश के विश्वविद्यालयों में अनुशंसित रिकमण्डेड पाठ्यपुस्तक के रुप में रखी गई। इसके साथ ही भैय्या प्रकाशन ने परिवर्तित पाठ्यक्रम के अनुसार वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र की दस पुस्तके और प्रकाशित की। कमल प्रकाशन इन्दौर ने भी आपकी चार पुस्तकें छापी।

इसके अलावा बुद्ध प्रकाशन मेरठ ने छब्बीस सरल पुस्तकें प्रकाशित की। एस.के. अग्रवाल, खुरजा ने औद्योगिक अर्थशास्त्र, विश्वविख्यात प्रकाशक एस.चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली ने बी.ए. भाग 1 एवं 2 की 4 पुस्तकें प्रकाशित की। साहित्य भवन आगरा ने आपकी चार पुस्तकें प्रकाशित की। मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल ने दो स्नातकोत्तर स्तर पर एकीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तथा दो स्नातक स्तर पर सेमिस्टर की पुस्तकें प्रकाशित की। साथ ही एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल द्वारा भी डॉ. शर्मा की 9,10 एवं 11 वीं की कक्षाओं के लिए भी पुस्तकें प्रकाशित की गई। **(शेष अगले अंक में)**

प्रस्तुति- दीपक शर्मा (इन्दौर)

बिजली वाले बाबूजी : श्री कृष्णवल्लभजी व्यास

मेरे पिताजी बाबूजी श्री कृष्णवल्लभजी व्यास का जन्म 1-11-1900 को राजगढ़ ब्यावरा स्टेट में राजवैद्य पं. श्री वल्लभजी व्यास के घर हुआ था। 15 वर्ष की आयु में उन्होंने मेट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की तब राजगढ़ नरेश राजा विक्रमादित्य सिंह जी ने उन्हें खुश होकर इंजीनियरिंग करने बड़ोदा में कला मंदिर कालेज में भेजा एवं 1920 में जब वे इलेक्ट्रिक इंजीनियर बनकर आए तब राजगढ़ में उन्हें बिजली उत्पादन हेतु नियुक्त किया। वे मुम्बई से मशीन एवं अन्य उपकरण लेकर राजगढ़ आए एवं वहां पावर हाऊस स्थापित किया जो आज भी वहीं स्थित है।

इन मशीनों की खरीदी पर उन्हें कमीशन देना चाहा तो उन्होंने लेने से इंकार कर दिया। कुछ वर्षों बाद जब इंग्लैंड से पोलिटिकल एजेन्ट राजगढ़ आए तब उन्होंने पिताजी को ईमानदारी एवं प्रशंसनीय कार्य हेतु प्रमाणपत्र दिया। बाद में उन्होंने राजगढ़ में वाटर वर्क्स की स्थापना की एवं राजगढ़ में घर-घर में नलों में पानी आने लगा। 1921 में रतलाम निवासी पं. मोजीशंकरजी मेहता की ज्येष्ठ पुत्री पू., चन्द्रावली व्यास के साथ उनका विवाह हुआ।

गरीबों एवं असहायों की वे हमेशा मदद करते थे एवं धार्मिक वृत्ति थी। उनकी छवि इतनी शालीन थी कि जब वे बाजार से निकलते तो दुकानदार अपना धंधा छोड़कर उन्हें उठकर नमस्कार किया करते थे। वे बड़े दानी थे और कहा करते थे कि जो सुख देने में है वह सुख लेने में नहीं है इसी कारण सेवा निवृत्ति के पश्चात उन्हें आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा परन्तु अपना पैतृक मकान एवं जमीन अपने परिजनों से नहीं मांगी। आज हम तीनों भाई श्री राधारमण व्यास ग्वालियर, श्री कृष्ण गोपाल व्यास उज्जैन एवं चि. बालमुकुन्द व्यास वाराणसी में उनके आशीर्वादों से सुखी है।

प्रस्तुत- कृष्णगोपाल व्यास
40, श्रीराम नगर, सांवेर रोड, उज्जैन
फोन 0734-2510966

DEALING IN
VIDEOCON
PAGARIA
ONIDA
SAMSUNG
ORIENT
khaitan
SINGER
Lords
WILSON

Mahesh Mehta

Mehta & Sons

SHOW ROOM

970, Sudama Nagar, Indore Ph.: 2481996, Mobile No. 98266-33350, 98277-99265

आशुतोष जोशी को पदोन्नति : बधाई

इन्दौर। 'सफलता' शब्द नव शिक्षित वर्गों के लिये एक मूल-मंत्र हो गया है। इस हेतु चारित्रिक-गुण स्वयं में उत्पन्न करना आवश्यक है।

जीवन में अनुशासन, कर्तव्य निष्ठा, कर्मठता, रुचि, ईमानदारी, समन्वय के साथ समर्पण, कार्य शैली, प्रोत्साहन, सहयोगी वर्ग से ताल-मेल, पारस्परिक स्नेह के साथ कार्य संपादन हो, तो सफलता की सीढ़ी के द्वार अंतराल में सहज ही खुल जाते हैं।

इन्हीं सद्‌गुणों के साथ भारती एयरटेल कंपनी में, मुख्य प्रबन्धक, सर्विस प्रोव्हीजनिंग मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पद पर क्षेत्रीय कार्यालय इन्दौर में कार्यरत श्री आशुतोष पी. जोशी (टीम एक्सलेंस अवार्ड से सम्मानित) का चयन व उन्नयन, राष्ट्रीय स्तर पर भारती एअरटेल के प्रेसीडेंशियल ऑफिस (राष्ट्रीय कार्यालय) नई दिल्ली में नेशनल हेड (ब) - (एड्रेस व्हेरीफिकेशन) के पद पर हुआ। श्री आशुतोष जोशी ने अपने नवीन पद का कार्यभार 17 नवम्बर 2008 को संभाल लिया हैं। अपने लघु कार्यकाल में नागर समाज के एक युवा व्यक्तित्व का राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा-पूर्ण पद् प्राप्त कर सफलता अर्जित करना समाज के गौरव, सौभाग्य, हर्ष की उपलब्धि का क्षण हैं।

-पी.आर. जोशी

528, उषा नगर, एक्सटेंशन, इन्दौर-9 (म.प्र.)

धोनी से मुलाकात

इन्दौर। विगत दिनों भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच के सिलसिले में इन्दौर आए क्रिकेटर महेन्द्रसिंह धोनी से हाथ मिलाते सुयश नागर, ये नईदुनिया के खेल प्रतिनिधि गजेन्द्र नागर के सुपुत्र है एवं श्री गेंदालालजी नागर के पौत्र हैं।

श्रीलंका के अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में डॉ. महेन्द्र नागर भाग लेंगे

इन्दौर। श्रीलंका के सर्वोदय सगंठन द्वारा ''धरती पर उत्तम स्थाई जीवन के लिये केन्द्रीयकृत सामुदायिक गतिविधियां'' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित किया जा रहा है। दिनांक 4 से 6 दिसम्बर तक आयोजित इस सेमीनार में राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. महेन्द्र नागर भाग लेंगे। श्रीलंका के सर्वोदय संगठन की 50 वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रमों में भारत श्रीलंका युवा मैत्री शिविर आयोजित करने का प्रस्ताव एवं रुपरेखा डॉ. नागर द्वारा प्रस्तुत की जावेगी। वर्ष 2009 में सर्वोदय संगठन श्रीलंका एवं राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में युवा मैत्री शिविर श्रीलंका में आयोजन किया जाना प्रस्तावित है, जिसमें भारत के 100 तथा श्रीलंका के 200 युवा सम्मिलित होकर विभिन्न रचनात्मक सामुदायिक गतिविधियों के क्रियान्वयन की रुप रेखा तैयार करेंगे।

विदित हो 1987 में प्रसिद्ध युवा कर्मी गांधीवादी श्री एस.एन. सुब्बारावजी के मार्गदर्शन में सर्वोदय संगठन श्रीलंका के सहयोग से युवा मैत्री शिविर आयोजित किया गया था जिसमें भारत के 60 तथा श्रीलंका के 150 युवाओं ने भाग लिया था।

डॉ. महेन्द्र नागर
52, क्लासिक पूर्णिमा इस्टेट, खजराना मेन रोड, इन्दौर 452016
फोन 0731-2560394, 98263-98463

राहुल त्रिवेदी प्रतिभा सिंटेक्स में

इन्दौर। छब्बीस वर्षीय राहुल त्रिवेदी बी.टेक टेक्सटाइल टेक्नॉलॉजी तथा एम.बी.ए. मार्केटिंग। वर्तमान में इंटरनेशनल मार्केटिंग मर्चेन्डाइजर (फैशन एण्ड अपैरल) के पद पर प्रतिभा सिंटेक्स लि. इन्दौर में कार्यरत हैं। इससे पूर्व आप मराल ओव्हरसीज लि. एवं टेक्स ट्रेड इंटरनेशनल सूरत में कार्यरत थे। आप पर्यावरणविद् प्रो. डॉ. राकेश त्रिवेदी व श्रीमती रेखा त्रिवेदी के सुपुत्र तथा सुप्रसिद्ध पत्रकार स्व. महेन्द्र त्रिवेदी के पौत्र एवं पटेल स्व. दुर्गाशंकर नागर के नाती है।

40, रुपराम नगर कालोनी,
माणिकबाग रोड, इन्दौर फोन 0731-2475785

जत्रा में नागर गृहिणी का प्रथम प्रयास

इन्दौर। विगत माह 17 अक्टूबर 08 को मराठी सोश्यल ग्रुप द्वारा आयोजित जत्रा में नागर, जोशी परिवार ने भी पुरणपोली का एक स्टाल लगाया था, कलम कड़छी और बड़छी हमारी पहचान है। उसी पहचान को प्रदर्शित करते हुए श्री पुरुषोत्तम जोशी जी के परिवार ने प्रथम प्रयास किया। चित्र उसी अवसर के। विस्तृत विवरण के लिए माह नवम्बर 08 का पृष्ठ क्रमांक 26 देखें- ''नागर गृहिणी का साहसिक कदम''।

गौरांगी का गौरव
स्वस्थ्य शिशु प्रतियोगिता में विजेता रही

इन्दौर। गौरांगी मेहता (सुपुत्री हर्ष-साक्षी मेहता) ने इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स इन्दौर शाखा द्वारा आयोजित की गई 'स्वस्थ शिशु प्रतियोगिता' (आयु समूह एक से तीन वर्ष) में तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतिवर्षानुसार यह प्रतियोगिता 23 नवम्बर 08 को एम.जी.एम. मेडिकल कालेज में आयोजित हुई। मेडिकल कालेज के डीन डॉ. अशोक वाजपेयी ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। ज्ञातव्य है कि गौरांगी मेहता के स्वास्थ्य की देखभाल सुप्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. रेणुका मेहता द्वारा की जाती है जो नागर महिला मंडल इन्दौर शाखा की सचिव भी है।

नागर महिला मंडल का आयोजन ४ दिसम्बर को

इन्दौर। नागर महिला मंडल द्वारा आगामी 4 दिसम्बर को संजीवनी सेवा संगम में प्रातः 11 बजे से 2 बजे तक अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस के अवसर पर विकलांगों की सहायतार्थ कार्यक्रम (आनन्द मेला) के रुप में आयोजित किया गया है। सभी महिलाएं एवं बच्चे कार्यक्रम में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनावें। संजीवनी सेवा संगम द्वारा 1 दिसम्बर से 7 दिसम्बर तक विभिन्न कार्यक्रम किए जा रहे हैं। कृपया विस्तृत जानकारी के लिए अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई फोन 2556266 एवं मो. 9425085052 पर सम्पर्क करें।

नागर विद्योत्तेजक फन्ड ट्रस्ट में श्री अमिताभ मंडलोई एवं श्री दीपक शर्मा ट्रस्टी मनोनीत

इन्दौर। समस्त नागर विद्योत्तेजक फंड ट्रस्ट की बैठक रविवार दिनांक 2-11-08 को अध्यक्ष डॉ. विष्णुदत्त नागर के निवास पर आयोजित हुई। बैठक में सर्वानुमति से दो नए ट्रस्टी श्री अमिताभ मंडलोई एवं श्री दीपक शर्मा का मनोनयन किया गया, नवनिर्वाचित ट्रस्टियों ने इस हेतु अपनी सहमति प्रदान कर दी है।

ज्ञातव्य है कि ट्रस्ट के सात ट्रस्टियों में दो स्थान रिक्त थे। उपाध्यक्ष श्री प्रभाषचन्द्रजी झा एवं आर.डी. जोशी के स्थान पर उपरोक्त ट्रस्टियों का मनोनयन किया गया है। बैठक के दौरान डॉ. विष्णुदत्त नागर अध्यक्ष, श्री सतीशचन्द्र झा, डॉ. नरेन्द्र नागर कोषाध्यक्ष, श्री सूर्यकांत नागर एवं डॉ. सतीश त्रिवेदी उपस्थित थे। सभी उपस्थित ट्रस्टियों ने आभार व्यक्त करते हुए दोनों नए ट्रस्टियों से समाज की शिक्षण संबंधि गतिविधियों के उत्कृष्ट संचालन एवं उन्नयन की आशा व्यक्त की।

अवसान दिनांक 27 नवम्बर 2008
प्रत्येक क्षेत्र में कर्त्तव्य निष्ठ श्री हरिशचन्द्रजी मेहता

कर्त्तव्य पालन कीजिए, यह धर्म सुख का मूल है,
निश-दिन उसी को सोचिए, तब यह सुलभ अनुकूल है।
कर्त्तव्य पालन में किसी से भय नहीं खाना चाहिए,
विभु से सदा डरिए, उसी में लौ लगाना चाहिये।

हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए, यह धर्म सुख का मूल है। यदि हम रात-दिन अपने कर्त्तव्य पालन के बारे में सोचेंगे, तो वह हमारे लिए सुलभ और अनुकूल हो जाएगा। हमें सदैव भगवान से डरना चाहिए और उसी का ध्यान करना चाहिए।

ऐसे ही कर्त्तव्य निष्ठा के धनी श्री हरिशचन्द्रजी मेहता (सुपुत्र श्री घासीलालजी मेहता-श्रीमती दुर्गादेवी मेहता) ने कार्य क्षेत्र, परिवार एवं समाज में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। 6 अगस्त 1920 को जन्मे श्री मेहता स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर में ग्रेड 'ए' के अधिकारी रहे। आपने इन्दौर में प्रधानकार्यालय, में स्टाफ सुप्रिटेंडेट, संयोगितागंज ब्रांच एवं प्रिंस यशवंत रोड ब्रांच के प्रबंधक पद के अलावा बड़वाह, तराना, मुंगावली में भी कार्यरत रहे तथा ईमानदारी एवं कर्त्तव्य निष्ठा के साथ यश एवं प्रतिष्ठा अर्जित की। कार्य क्षेत्र में प्रेरणादायक उपलब्धियों के साथ सुसंस्कृत परिवार विरासत में छोड़ा है। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री गिरीश मेहता म.प्र.वि.मं. में वरिष्ठ अधिकारी रहे, द्वितीय पुत्र श्री देवेन्द्र मेहता स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर में ही वरिष्ठ पद पर कार्यरत है तथा तृतीय पुत्र श्री दिलीप मेहता म.प्र.वि.मं. में महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत है। सुपुत्री श्रीमती मीनाक्षी दवे- एवं दामाद श्री ओमप्रकाश दवे हैं। इनका सम्पूर्ण परिवार नागर संस्कार एवं संस्कृति से ओतप्रोत है। मृदुभाषी एवं कर्त्तव्य निष्ठ श्री हरिशचन्द्रजी मेहता ने सामाजिक कल्याण में भी अपनी भूमिका निभाई हाटकेश्वर पेढ़ी की स्थापना में

आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा उसमें संस्थापक ट्रस्टी रहे। समाजबंधुओं का धन एक दूसरे को जरुरत पड़ने पर काम आए यही उद्देश्य इस पेढ़ी की स्थापना का था। वर्तमान में भी यह पेढ़ी कार्यरत है। समाज सम्बंधि प्रत्येक कार्य में आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे तथा आपके मार्गदर्शन में परिवार भी समाज सेवा में अग्रणीय है। दिनांक 27 नवम्बर 2008 को 88 वर्ष की आयु में आपका अवसान हुआ। श्रद्धांजलि सभा में नागर समाज एवं सहयोगी संस्थाओं की ओर से सर्वश्री आशीष त्रिवेदी, विनोद मंडलोई, डॉ. सूर्यकांत नागर, व्रजेन्द्र नागर, दीपक शर्मा, मनोहर शर्मा (बेरछा), डॉ. आर. के नागर (उज्जैन) तथा स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर से सर्वश्री शक्ति वीरेन्द्र सिंह, डी.पी. शर्मा, श्याम पांडे, प्रकाश हरदास, पलसीकर कालोनी रहवासी संघ के श्री सतनामसिंह, म.प्र.वि.मं. श्री पी.डी. मेहता, सेन्ट्रल स्कूल के श्री गणेशचन्द्र व्यास, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर आफिसर्स एसोसिएशन के फाउन्डर मेम्बर श्री श्रीनिवासन ने श्रद्धांजलि अर्पित की। त्रयोदशा, पगड़ी एवं ब्रह्मभोज दिनांक 9 दिसंबर 08 को स्वनिवास, विद्या विहार 104, पलसीकर कालोनी इन्दौर में दोपहर 12 बजे आयोजित है।

स्व. श्री लक्ष्मीकांत व्यास
'मेरे पिता'

मेरे पिता परिवार में चार भाइयों में ज्येष्ठ थे, जिन्हें हम 'दादा' कहकर सम्बोधित करते थे। कारण कि बचपन से हम अपने काकाओं से यही सम्बोधन सुनते आये थे। और वैसे भी भाइयों में अग्रज को 'दादा' ही कहते है।

मेरे दादा साधारण होकर भी असाधारण थे। उनका रहन-सहन, पहनावा किसी अफसर से कम नहीं था। रोज शेविंग बनाते और चुस्त-दुरुस्त रहते। उनके मित्रों की संख्या भी बेशुमार थी। उनके मित्रों में पूना के मालवी एवं हिन्दी फिल्मों के संवाद लेखक श्री श्रीनिवास जोशी, मुम्बई के रेल्वे इंजिनियर श्री यशवंत सौदंतीकर, इन्दौर के नागर समाज के वरिष्ठ एवं जनसंपर्क अधिकारी श्री महेन्द्र भाई त्रिवेदी थे। ये चारों जहां भी सैर-सपाटे अथवा देव-दर्शन को जाते तो समाचार पत्र में इनकी खबर बन जाती। चारों अंतरंग मित्र जब इकट्ठे होते तो हास-परिहास की महफिल जम जाती, जिसका आनन्द हम सपरिवार लेने से नहीं चूकते।

हमारे दादा की प्रारंभिक शिक्षा मंदसौर में हुई। जहां हमारे फूफाजी श्री राधावल्लभजी नागर इनके आचार्य थे। उनके सहपाठी में फूफाजी के छोटे भाई श्री कृष्णवल्लभजी नागर भी थे। एक बार का वाकया मुझे याद आ रहा है। जब काकाजी श्री कृष्णवल्लभजी नागर हमें सुनाया करते थे। ये दोनों बाजार में जलेबी खाने गये। जलेबी इतनी अच्छी लगी तो बोले- दोस्त, जलेबी जोरदार है क्यों न घर के लिये बंधवा ले। जलेबी की पूड़िया बंधवायी, पैसे दिये और जेब में रखकर चल दिये। घर पहुंचे तो देखा जलेबी की चासनी टपक रही है, यह देखकर सभी हंसे और वे भी ठहाका मारकर खूब हंसे।

जब पूना से श्री निवासजी जोशी इन्दौर आते तो इन्हें लेकर सराफा बाजार जाते। वहां स्वादिष्ट व्यंजनों का इतना आनन्द लेते कि घर आने पर भूख गायब हो जाती।

सन् 1955 में दादा के परम अंतरंग मित्र श्री श्रीनिवास जोशी के आग्रह पर ''प्रभात फिल्म कंपनी'' के बैनर तले पूना में हिन्दी फिल्म ''सीधा रास्ता'' में हमारी बड़ी बहन श्रीमती स्नेहलता पंचोली ने बेबी स्नेहलता के नाम से ग्रामीण परिवेश की पटकथा पर आधारित बचपन का पात्र अभिनय किया था। ऐसे खुशमिजाज और सबको खुश कर देने वाले हमारे पिता का व्यक्तित्व हरेक को प्रभावित करता था। कभी नारियल के समान भी हो जाते, बाहर से कठोर और भीतर से कोमल। हमें डांटते-फटकारते, फिर शाम को खाने-पिलाने ले जाते।

इन किस्सों को यादकर हम उन्हें आज भी हमारे निकट महसूस करते हैं।

नरेन्द्र व्यास
30/1, स्नेहलतागंज, इन्दौर

नवम पुण्य स्मरण
स्व. श्रीमती वेणुबाई त्रिवेदी

जन्म तिथि 5-6-1913 **पुण्य तिथि 9-12-99**

स्व.श्रीमती वेणुबाई त्रिवेदी का जन्म 5-6-1913 को गंगा दशहरा के दिन बजरंग गढ़ जिला गुना में स्व. श्री पुरूषोत्तमजी भट्ट (नागर) के यहां हुआ। उनका विवाह तराना निवासी बापूजी त्रिवेदी के सुपुत्र श्री दुर्गाशंकर जी त्रिवेदी के साथ रंथभंवर में हुआ था। वे बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी, जिसका निर्वहन उन्होंने अपने सम्पूर्ण गृहस्थ जीवन में किया। अपने मृदु स्वभाव एवं विवेक शीलता से अपने परिवार को सदैव बाँधे रखा। वे अपनी दानशीलता, कोमल स्वभाव एवं सुहृदयता के कारण परिवार में वंदनीय रही। सभी के प्रति सद्भावना एवं अपनत्व रखने के कारण वे सभी की प्रिय रहीं। वे एक सद्गृहिणी एवं आदर्श माता थी। आपकी एक पुत्री एवं तीन पुत्र हैं। वे अपने पीछे हरा-भरा एवं समृद्ध परिवार छोड़कर परमेश्वर में लीन हुई।

आशीष त्रिवेदी-सौ. प्रमिला (पुत्र-पुत्रवधु) डॉ. सतीश त्रिवेदी-सौ.अर्चना (पुत्र-पुत्रवधु)
प्रवीण त्रिवदी-सौ. मीना (पुत्र-पुत्रवधु) श्री वीरेन्द्र नागर- सौ.कुमुद (दामाद-पुत्री)

सनातन धर्म एवं भारतीय संस्कृति के उत्थान के निमित्त

अष्टोत्तरशत् (108) श्रीमद् भागवत रत्न ज्ञान महोत्सव

21 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2008 तक

शोभा यात्रा

21 दिसम्बर प्रात : 9 बजे दसानीमा धर्मशाला

मालगंज चौराहा से अन्नपूर्णा मंदिर

उद्घाटन विधि

21 दिसम्बर 08, प्रातः 11.00 बजे अन्नपूर्णा मंदिर

उद्घाटन

गोस्वामी श्री 108 श्री हरिरायजी महोदय (इन्दौर)

एवं

महामण्डलेश्वर श्री विश्वेश्वरानन्दजी

(अन्नपूर्णा मंदिर) इन्दौर

कथा समय प्रतिदिन

प्रातः 9.30 बजे से 12.30 बजे

एवं सायं 3.30 बजे से 6.30 बजे

कथा स्थल

अन्नपूर्णा मंदिर प्रांगण, इन्दौर (म.प्र.)

प्रवक्ता : **विद्वान संत पूज्यश्री रमेश भाई ओझाजी**

मुख्य मनोरथी- श्री छगनलाल भगवानदास नागर

कार्यक्रम

21.12.2008, रविवार प्रातः 9 बजे शोभा यात्रा ❊ 21.12.2008, रविवार प्रातः 11 बजे कथा उद्घाटन ❊ 21.12.2008, रविवार सायंकाल- श्यामघटा मनोरथ ❊ 22.12.2008, सोमवार सायंकाल- चीर हरण मनोरथ ❊ 23.12.2008, मंगलवार सायंकाल- शीश महल मनोरथ ❊ 24.12.2008, बुधवार वामन जन्म, नृसिंह जन्म, राम जन्म ❊ 24.12.2008, बुधवार सायंकाल- कृष्ण जन्म एवं नंद महोत्सव ❊ 25.12.2008, गुरुवार गिरिराज महोत्सव, 26.12.2008 ❊ शुक्रवार रुक्मणी विवाह ❊ 27.12.2008, शनिवार माखन चोरी मनोरथ ❊ 27.12.2008, शनिवार कथा समापन

जो भी नागर परिवार इस आयोजन में सम्मिलित होना चाहते हो,
उन्हें समस्त सुविधाएं उपलब्ध होगी। रहना, भोजन, आदि के लिए पूर्व सूचना देवें।
प्रदीप मेहता- मो. 94259-75539, श्रीमती बिन्दू मेहता- मो. 94240-84744

अब चाहिये कामकाजी बहू

वो दिन अब बीत गये जब मेट्रीमोनियल विज्ञापन में लिखा होता था सुंदर, सुशील और घरेलू कन्या चाहिए। दरअसल उस वक्त एक अच्छी बहू का मापदंड यही था। हालांकि शुरुआत के दो मापदंड तो आज भी वही है मगर अब घरेलू कन्या की जगह कामकाजी कन्या ने ले ली है। इस बात का श्रेय जाता है विश्व स्तर पर आई आर्थिक मंदी को। लोग शायद सोच रहे हैं कि यह आर्थिक मंदी केवल बुरी खबर ही लेकर आई है मगर हम आपको बता दें कि इस मंदी के कुछ फायदे भी हैं। लोगों की पारंपरिक सोच में बदलाव भी आ गया है और कामकाजी बहुओं की मांग अचानक बढ़ गई है। यह मांग ज्यादातर बड़े शहरों में रह रहे लड़कों की तरफ से आ रही है। खास बात यह है कि ये लड़के मध्यम वर्गीय परिवारों से हैं। लेकिन उनकी सोच में आई बदलाव विचारों का खुलापन नहीं, आज की डोलती आर्थिक स्थिति है।

एक जानीमानी मेट्रिमोनियल साइट के हेड भी ऐसा ही मानते हैं। उनका कहना है कि कंपनियों में जॉब और कॉस्ट कटिंग प्रोसेस से लोग बहुत घबरा गए हैं और इसलिए वे कामकाजी महिलाएं चाहते हैं।

कामकाजी वधू के लिए विज्ञापन देने वाले संकल्प का कहना है कि, ''मैं अकेले घर चलाऊं और मेरी पत्नी घर बैठकर खाना पकाए'' यह मेरे लिए काफी मुश्किल होगा। आजकल जॉब इंसिक्योरिटी इतनी बढ़ गई है कि मिया बीवी दोनों के लिए ही काम करना जरुरी हो गया है। अगर किसी कारणवश एक की नौकरी छूट गई तो दूसरे की नौकरी से काफी सहारा मिल सकता है। वैसे भी महंगाई आसमान छू रही है। ऐसे में एक व्यक्ति की कमाई से घर चलाना मुश्किल हो गया है। कल्पना जो हाल ही में शादी के सूत्र में बंधी हैं का कहना है कि 'पहले मेरे सास-ससुर और पति मेरे बाहर जाकर काम करने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थे। मगर यह मंदी मेरे लिए वरदान बनकर आई है। अब तो मेरे सास-ससुर भी चाहते हैं कि मैं बाहर जाकर काम करूं। मैं तो कहती हूं कि मेरी तरह हर कामकाजी महिला के लिए यह मंदी मददगार साबित होगी'।

जल्दी ही घर बसाने वाली पारुल कहती हैं कि, 'आज हमारे पास ठोस वजह है सास-ससुर को देने के लिए ताकि वे हमें काम पर जाने से न रोक सके। मंदी ने हर किसी को हिला कर रख दिया है। मुझे नहीं लगता कि अब किसी को भी अपनी बहू के नौकरी करने पर आपत्ति होगी।' इन सबके विचारों पर यह कहना गलत नहीं होगा कि मध्यमवर्गीय महिलाओं के लिए यह मंदी एक वरदान साबित हुई है।लेकिन लड़कों की मुश्किलें काफी बढ़ गई हैं, क्योंकि अब लड़कियों के पेरेन्टस अपनी लड़की उसी घर में भेजना चाह रहे हैं जहां लड़का सरकारी नौकरी कर रहा हो। शोध बताते हैं कि पहले भी 80 फीसदी लड़कियां शादी करने के लिए ऐसे ही वर तलाशती थीं जिनकी सैलरी अच्छी हो, तो अब लड़कों की बारी है। मंदी के दौर ने उन्हें भी अपनी पार्टनर के पर्स का महत्व समझा दिया है।

- सौ. रूचि झा

ESTD : 1991 REGD.No. 101410638/PMT/ल.क-1
Ph.No.(Works)07662-253735
KANPUR ELECTRONICS
Opp.SWAGAT BHAVAN,SUPER MARKET, REWA (M.P.)
CONTACT PERSON :
(A) SHRI KISHAN PANDYA,CHIEF EXE.(TECH)
Mob.No.094253-57898
(B) SMT.MALINI PANDYA,PROPRITOR,
Mob.No.094258-74798
(C) SHRI JAWAHARLAL K. PANDYA, FOUNDER
Ph. No. 07662-253535, Mob.No.098270-68329

शुभकामनाओं सहित
शर्मा ब्रदर्स
ब्रोकर, कॉटन सीड, केक एंड आईल
4/2, मुराई मोहल्ला, श्री निकेतन, शॉप नं. 1 छावनी, इन्दौर
फोन 2706115, 2707115, मो. 94240-09615, 9826088115, 9826081115, 9926088115, 9009562115

श्रीमद् भागवत में क्या है?

''पिबत् भागवतम् रसमालयकम्''

श्रीमद् भागवतं पुण्यमापुरारोग्यपुष्टिदम्।

पठनाच्छ्रवणाद वापि सर्व पापैः प्रमुच्यते।।

यह पावन पुराण श्री मद् भागवत आयु, आरोग्य और पुष्टि को देने वाला है, इसका पाठ अथवा श्रवण करने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्थाः

वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

स्वर्गस्थिता ये पितरोऽपि धन्या,

यस्मिन् कुले वैष्णव नाम धेयम् ।।

यदि किसी कुल में भगवान विष्णु का नाम स्मरण करने वाला बालक जन्म लेता है तो उसके कुल की पवित्रता होती है, उसकी माता कृतार्थ हो जाती है, स्वर्ग में स्थित उसके पूर्वज भी धन्य होते हैं तथा उसके पुण्य प्रताप से पूरी पृथ्वी पुण्यवती हो जाती है।

'भा' प्रकाशो चिदानन्दो गतिर्यस्य दुः ख्यया।

वरिष्ठः सर्व शास्त्रेषु तरणीव भवार्णवे।।

भा- अक्षर से भास्य प्रकाश स्वरुप सच्चिदानंद भगवान है।

ग- अक्षर से भगवान की लौकिक गति का अर्थ है

व- अक्षर से भगवान सभी शास्त्रों में वरिष्ठ श्रेष्ठ है।

त- अक्षर से संसार रुपी समुद्र से तरने की नौका है।

''तेनेयं वाऽमयी मूर्तिः प्रत्यक्षा बर्तते हरे।''

श्रीमद् भागवत जी भगवान विष्णु (हरि) की वाणीमय मूर्ति है (वागमयी पूजा) (श्री नाथ की मूर्ति से देखें)

श्रीमद् भागवतजी में बारह स्कन्ध है जो भगवान के बारह अंग हैं।

श्रीमद् भागवतजी में 336 अध्याय है जो भगवान की नाडी है।

श्रीमद् भागवतजी में 18000 श्लोक है जो भगवान की अन्तः नाड़ी है।

श्रीमद् भागवतजी के 576000 अक्षर है जो भगवान के रोम है।

श्रीमद् भागवत् जी के प्रथम एवं द्वितीय स्कन्ध भगवान के चरण है।

श्रीमद् भागवतजी के तृतीय एवं चतुर्थ स्कन्ध भगवान की जंघाए है।

श्रीमद् भागवतजी के पंचम स्कन्ध भगवान की कटि (कमर है) जिस पर भगवान का बायां हाथ है।

श्रीमद् भागवतजी का षष्टम स्कन्ध भगवान की नाभी है।

श्रीमद् भागवतजी के सप्तम एवं अष्टम स्कन्ध भगवान की दोनों भुजाएं है।

श्रीमद् भागवतजी के नवम एवं दशम स्कन्ध भगवान के स्तन है।

श्रीमद् भागवतजी का एकादश स्कन्ध भगवान का हृदय है।

श्रीमद् भागवतजी का द्वादश स्कन्ध भगवान का ललाट है।

श्रीमद् भागवतजी भगवान का पंचम स्वरुप है।

श्रीमद् भागवतजी न सिर्फ प्रेम, त्याग, सेवा, तथा भगवत् प्राप्ति का साधन है बल्कि भगवान के साक्षात दर्शन का एवं समस्त भवसागर रोगों की एक मात्र औषधि भी है।

श्रीमती बिन्दु मेहता मो. 94240-84744

जय हाटकेश सिर्फ नागर बंधुओं हेतु जय श्री कृष्ण

व्यापारी बनें मात्र 500/-रुपए से शुरू करें...

हमारे उत्पादन

- जालिम-एक्स मलम
- जालिम-एक्स लिक्विड
- जालिम-एक्स लोशन
- पंचसुधा
- वामा क्रीम
- मेकाडो बाम
- अंजू बाम
- पेन ऑफ ऑईल
- पेन क्योर आइंटमेंट
- हजम टेबलेट
- अंजू कफ सायरप
- अर्शोमृत टेबलेट
- सुगम चूर्ण
- पाचक चूर्ण
- नारी रसायन

आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP.पर बिक्री करें।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे-

नवीन झा

Anju अंजू फार्मास्यूटिकल्स

111/112 अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इंदौर- 452001- (म.प्र.)

मोबाइल नंबर- 09425062415

वैवाहिक युवक

1. महेन्द्र रमेशभाई नागर
जन्मतिथि 3 अप्रैल 1985
शिक्षा- बी.कॉम. (गुजरात वि.वि.)
कार्यरत- स्टोर आफिसर, स्टेट वेयर हाऊस
सम्पर्क- कन्या शाला रोड, बावा डीला के सामने, गोमतीपुर, अहमदाबाद,
फोन 9904154332, 97 23243002, 9328449104

2. संजय पुरुषोत्तम रावल
जन्मतिथि - 25.7.1971
शिक्षा- 10वीं
कार्यरत- प्रायवेट नौकरी
एवं

3. अतुल पुरुषोत्तम रावल
जन्मतिथि 18.06.1984
शिक्षा- 12 वीं
कार्यरत- भास्कर टी.वी.
सम्पर्क- पुरुषोत्तम रावल, मु.पो. पालिया जि. इन्दौर
मो. 99264-91869

4. गौरवर्ग, डॉक्टर बीएएमएस
25 वर्षीय
वार्षिक आय, 300000, पिता चिकित्सक, माता शासकीय सेवा में प्राचार्य सम्पन्न एवं शिक्षित परिवार के लिए गृहकार्य दक्ष सुयोग्य कन्या चाहिए। फोटो, बायोडाटा सहित पूर्ण विवरण प्रथमबार में निम्न पते पर प्रेषित करें मोहन नागर डी-9, एल.आय.जी.
ऋषि नगर मेन रोड, उज्जैन
फोन 0734-2526667

5. राहुल डॉ. ए.आर. नागर
जन्मतिथि 8.4.1983
शिक्षा- बी.ए.एम.एस.
कार्यरत- प्रायवेट जॉब
सम्पर्क- 889, छोटा बाजार, महू
संपर्क- (07324) 275517
मो. 9826996882

वैवाहिक युवती

1. कु. रितु पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी
जन्मतिथि 30.09.1983, समय 10.40pm (गोटेगांव) नरसिंहपुर
शिक्षा- एम.ए. संस्कृत फायनल
सम्पर्क- वैद्य पं. शिवेशचन्द्र त्रिवेदी शास्त्री
3, ब्राह्मण गली बहादूरगंज, उज्जैन
फोन 0734-2559713 मो. 9827306471, 9893205524

2. मेनका कुलेन्द्र नागर 'एड्व्होकेट'
जन्मतिथि 13 सितम्बर 1984
शिक्षा- एम.ए. हिन्दी, कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स
कार्यरत- अध्यापिका बाल श्रमिक विद्यालय इकलेरा
सम्पर्क- 'स्मृतिकुंज' तहसील रोड, इकलेरा, जिला झालावाड़ (राज.) फोन 07431-272506 मो. 094131-01699

3. श्वेता मुकेश नागर
जन्मतिथि 12.10.1985
शिक्षा- बी.एस.सी.
एवं

4. स्नेहा मुकेश नागर
जन्मतिथि- 13.07.1987
शिक्षा- (बी.ई.)
सम्पर्क- 769, खजराना, इन्दौर मो. 9826123450

5. कु. श्रद्धा भरत रावल
जन्मतिथि- 13.12.1982
शिक्षा- एम.ए.
सम्पर्क- 17, गणेशपुरी, खजराना
मो. 9893073467

''जनवरी 2009'' जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित किया जाएगा उज्जैन में 24 दिसंबर 08 को आयोजित जीवन साथी परिचय सम्मेलन के प्रतिभागियों का विवरण। अपनी प्रति संभाल कर लेवें।

-सम्पादक

जिसने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता नहीं किया

मध्यप्रदेश का प्रमुख समाचार पत्र **दैनिक अवन्तिका**

इन्दौर-7, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड फोनः-0731-4085777 मो.-98277-71777

उज्जैन- 2, रानी लक्ष्मीबाई मार्ग फोनः-0734-2554455 फेक्सः-2559777

इन्दौर- 20, जूनी कसेरा बाखल, फोनः-0731-2450018 फेक्सः-2459026

डॉक्टर - हेल्प लाईन

चिकित्सा सेवाएं	डॉक्टर का नाम	पता एवं फोन नं.
1. सिविल सर्जन, पैथालॉजिस्ट	डॉ. सतीश त्रिवेदी	एम.टी.एच. कम्पाउण्ड जिला अस्पताल मोबाईल 9425313378
2. शिशुरोग विशेषज्ञ	डॉ. रेणुका मेहता M.B.B.S.	11/1, एल.आय.जी. चौराहा, इन्दौर फोन 2550550
3 हृदय रोग विशेषज्ञ	डॉ. प्रदीप मेहता M.B.B.S. एम.डी.मेडीसिन	10, ओल्ड पलासिया, श्रीनगर, इन्दौर फोन 2550550/गीता भवन, अस्पताल
4. कन्सल्टेंट यूरोलॉजिस्ट एवं एन्ड्रोलॉजिस्ट गुर्दा, मूत्र रोग विशेषज्ञ एवं सर्जन	डॉ. रवि नागर M.S.DNB (urolgy)	सी.एच.एल. अपोलो हास्पीटल, ए.बी. रोड, एल.आय.जी. तिराहे के पास, इन्दौर फोन 4072550, मो. 98263-68623
5. डेन्टल सर्जन	डॉ. सौरभ नागर BDH	4/5, नाथकृपा, नाथ मंदिर इन्दौर फोन 0731-3290725, मो. 98260-82494

उपरोक्त सभी चिकित्सक अपनी विधा में कुशल एवं समाजसेवा की भावना से ओतप्रोत है, कोई भी नागर बंधु अपनी चिकित्सकीय समस्या के लिए अपने परिचय के साथ इन डॉक्टरों से सम्पर्क करें उन्हें पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा। समाजसेवा की दृष्टि से ओर भी डॉक्टर इस सूचि में अपना नाम दर्ज कराना चाहें तो उनका स्वागत है।- सम्पादक

शिक्षा हेल्प लाईन

जनवरी अंक से चिकित्सा हेल्पलाईन के साथ शिक्षा हेल्प लाईन शुरु की जा रही है। ज्ञातव्य है कि बाहर से बड़ी संख्या में विद्यार्थी इंदौर पढ़ने आ रहे हैं तथा यहां की शासकीय, अशासकीय शिक्षण संस्थाओं में नागर बंधु प्रभावशाली पदों पर बैठे हैं। समाज के विद्यार्थियों को लाभान्वित करने वाली हेल्प लाईन पूर्णतः निःशुल्क है।

गुरुजी श्री कैलाश नागर
बी.ए.बी.जे.कॉम. ज्योतिष रत्न, वास्तु विशारद
चेयरमेन--------------------
ह्यूमन वेलफेयर कमिटमेंट चेरिटेबल ट्रस्ट
विशेषज्ञः- फेस रीडिंग, हस्तरेखा, जन्मफल, वर्ष-फल, लाल किताब एवं बिना तोड़फोड़ वास्तु दोष निवारण। मिलने हेतु संपर्क करें: विशाल पटेल, मो.98260-97866

महर्षि पाराशर
एस्ट्रो इन्टरनेशनल सेंटर
ॐ ☪ ੴ ✝
सर्व धर्म समभाव
आश्रम : 5, मारुति नगर, सुखलिया,
निवास : 17-बी, 24 बंगलो, स्कीम नं. 114-I,
सागर ऑटो मोबाइल के सामने, देवास नाका,
ए.बी. रोड़, इन्दौर फोन-(नि.) 0731-2554488 मो.94250-55308

इस वर्ष का स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार देवास के दिलीप मेहता को दिया जाएगा

इन्दौर। इस वर्ष का स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार देवास के वरिष्ठ शिक्षक श्री दिलीप मेहता को दिया जाएगा। उन्हे ये पुरस्कार उज्जैन में आगामी 25 दिसंबर को नागर समाज के राज्यस्तरीय वार्षिक प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के रुप में प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और सम्मान निधि भेंट की जाएगी।

पुरस्कार के लिए श्री मेहता का चयन नागर समाज के सात वरिष्ठ शिक्षकों की चयन समिति की अनुशंसा के आधार पर किया गया है। चयन समिति की अध्यक्ष श्रीमती संगीता विनोद नागर ने बताया कि यह पुरस्कार हर साल शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाधारण उपलब्धियों के लिए मध्यप्रदेश नागर समाज के किसी शिक्षक/शिक्षिका को दिया जाता है। समिति में सर्वश्री डॉ. विश्वनाथ श्रोत्रिय, उपेंद्रनारायण मेहता, अनिल नागर, रामचंद्र जोशी, दिलीप त्रिवेदी, नवीनचंद्र रावल और विश्वनाथ व्यास सदस्य के रुप में शामिल हैं। वर्ष 1972 से शिक्षा विभाग में कार्यरत श्री दिलीप मेहता एक लोकप्रिय शिक्षक व प्रधान अध्यापक के रूप में देवास जिले मे पदस्थ रहे हैं। शिक्षक दिवस समारोह में श्रेष्ठ शिक्षक के रुप में सम्मानित श्री मेहता का शिक्षक कांग्रेस व जायंट्स क्लब सहित अनेक संस्थाओं ने सम्मान किया है। वे मध्यप्रदेश कन्या दृष्टिहीन कल्याण केन्द्र के उपाध्यक्ष भी रहे हैं।

यह पुरस्कार नागर समाज के वरेण्य तथा देवास के पूर्व सहायक जिला शाला निरीक्षक स्व. रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी पुत्री श्रीमती संगीता विनोद नागर ने स्थापित किया है जो कि स्वयं भी शिक्षक हैं। इससे पहले यह पुरस्कार शाजापुर के राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक श्री हेमंत दुबे और उज्जैन की वरिष्ठ शिक्षिका सुश्री शीला व्यास को प्रदान किया जा चुका है।

(श्रीमती संगीता विनोद नागर)
अध्यक्ष चयन समिति

सबसे प्रथम कर्त्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है
शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है।।

जन्मदिन पर बधाई

जाग्रत व्यास
23 दिसम्बर 2006
आवास-145/15, रामरहीम कालोनी, राऊ
मो. 98263-52749

चि. मुकेश
आत्मज- डॉ. रामरतन-सुमित्रा शर्मा
25 नवम्बर 1964

चि. हर्षित
आत्मज- मुकेश-मनीषा शर्मा
जन्मदिन 25.1.1991
निवास- सुमित्रा सदन 63,
रविन्द्र नगर उज्जैन
फोन 0734-2516603

आशुतोष नागर
(सुपुत्र- प्रद्युम्न-राधा नागर)
दिनांक 14.12.1994
कीमिता मेहता
दिनांक 11.12.1981

शुभम नागर
सुपुत्र-राकेश-सौ.रेखा नागर
11 दिसम्बर
आवास- खजराना, इन्दौर
मो. 9827228950

हर्ष मंडलोई
सुपुत्र- राजकुमार-विद्या मंडलोई
3 दिसम्बर
खंडवा फोन 0733-32317

यशस्वी शर्मा
(सुपुत्री- दीपक-सौ. संगीता शर्मा)
24 दिसम्बर
दैनिक अवन्तिका परिवार इन्दौर
मो. 94250-63129

मंशा शर्मा
(सुपुत्री- मनीष-सौ. सीमा शर्मा)
29 दिसम्बर
दैनिक अवन्तिका परिवार इन्दौर
मो. 99262-85002

❒ संरक्षक
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर
सेमली-मालवा फोन 9329144644
श्रीमती शारदा विनोद मंडलोई
इन्दौर फोन- 0731-2556266
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता
भोपाल 07552552100
श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
इंदौर 07312450018
श्रीमती रमा सुरेंद्रजीमेहता 'सुमन'
उज्जैन 07342554455
श्रीमती अंजना सुरेंद्रजी मेहता
शाजापुर 07364229699

❒ प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा 99262-85850
❒ संपादक
सौ.रुचि उमेश झा 98260-46043
❒ सह सम्पादक
सौ.मीना प्रवीण त्रिवेदी 93290-78757
सौ.शीला जगदीश दशोरा
फोन-0731-2562419
सौ.तृप्ति निलेष नागर
मोबा. 9303229908
सौ.मंजू रविन्द्र व्यास
मो. 92298-25454
सौ.सोनिया विवेक मंडलोई
मो. 097121-38061
सौ.वन्दना विनीत नागर
फोन- 2594507
सौ.निशा पं.अशोक भट्ट
मो.9302105856
सौ.बिन्दु प्रदीप मेहता
मो. 94240-84744
सौ.ज्योति राजेन्द्र नागर
मो.93032-74678
सौ.ममता मुकुल मंडलोई
फोन- 0731-2484370
सौ.आशा योगेश शर्मा
मो. 94250-72237

❒ **प्रदेश संवाददाता** ❒
उज्जैन- मो.9977766777
सौ.तृप्ति संदीप मेहता
उज्जैन- मो.9301137378
सौ. अनामिका मनीष मेहता
शाजापुर-मो.94250-34818
सौ.चेतना विवेक शर्मा
खण्डवा-मो.98267-74742
सौ.शोभना सरोज जोशी
खरगोन-मो.98936-18231
सौ.वर्षा आशीष नागर,
रतलाम-मो.94251-03628
सौ.हर्षा गिरीश भट्ट
नीमच-मो.94240-33419
सौ.सावित्री रमेश नागर
नागदा-मो.98270-85738
सौ.शैलबाला विजयप्रकाश मेहता
भोपाल-फोन-0755-2463303
सौ.पूर्णिमा डॉ.पियूष व्यास
खड़ावदा-मो. 98267-32441
सौ.नैना ओमप्रकाश नागर
पचौर-मो.94244-65799
सौ.संध्या शैलेन्द्र नागर
रीवां-मो.-94258-74798
सौ.मालिनी किशन पण्डया
राऊ-फोन-0731-6538275
सौ.माया गिरजाशंकर नागर
माकड़ोन-फोन-07369-261391
सौ.सुनीता महेन्द्र शर्मा
पीपलरावां-फोन-07270-277722
सौ.शकुंतला हरिनारायण नागर
देवास-मो.98273-98235
सौ.सरिता मोहन शर्मा
सागर- मो. 98270-88588
श्रीमती अलका प्रमोद नागर

❒ **अंतर्राज्यीय संवाददाता** ❒
नई दिल्ली-श्रीमती मृदुला-सुधीर पांड्या
ई-921, सरस्वती विहार, दिल्ली- 34
फोन-09868048080
मुम्बई-सुश्री कांता बेन त्रिवेदी
2, प्रेम नगर सर विट्ठलदास नगर नार्थ
एवेन्यू रोड सांताक्रुज वेस्ट, मुम्बई
फोन-022-26604762
कोलकाता-सौ. शशि आर.के. झा
पी-6 डोबसन लेन हावड़ा-01
फोन-033-26665094
हैदराबाद-नवरत्न राजेन्द्र व्यास
के. चन्द्रकांत ज्वेलर्स
21-3-131/7, आगरा होटल के पास
चरकमान, मो.09346998456
इलाहाबाद-श्रीमती सुधा नित्यानंद नागर
60/45, ऊँचा मंडी, फोन- 0532-2240059
जूनागढ़-सौ. गिरा-दुर्गेश आचार्य
'अमर' गोकुल नगर
बी/एच. लोहियावाड़ी, जूनागढ (गुज.)
अकलेरा- श्रीमती गायत्री-कुलेन्द्र नागर
जिला झालावाड़ फोन 07431-272506
प्रतापगढ़-श्रीमती मंजू शिवशंकर नागर
'प्रज्ञा' सांवरिया कालोनी, एरियापति मार्ग
बांसवाड़ा-राजेन्द्रप्रसादजी त्रिवेदी
27/1,सुभाष नगर, फोन-09413626058
चित्तौड़गढ़-श्रीमती पुष्पा डॉ. रमेश दशोरा
39, नगर पालिका कालोनी,मो 9414097972
कोटा-श्रीमती आशा डॉ. अशोक मेहता
4-एफ/16, विज्ञान नगर, फोन-982910081
उदयपुर-श्रीमती शैला हेमन्त दशोरा
8,दशोरा की गली, मोती चोहट्टा
फोन-02942529620
जयपुर-सुषमा वीरेन्द्र कुमार नागर
सी-5, प.नै.बैंक अधिकारी आवासीय
कालोनी, जगतपुरा रोड, मालवीय नगर,
मोबा.-09414214143

सम्पादकीय कार्यालय

मासिक जय हाटकेशवाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर
फोन (0731) 2450018, मो. 9425063129, फेक्स (0731) 2459026
awantikaindore.com, hotkeshvani@gmail.com, manibhaisharma@gmail.com